'राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

समाचार गेट

TITLE CODE : HARHIN11569

वर्ष 01, अंक 230 पृष्ठ 08 मूल्य 01 रूपए मंगलवार, 05 नवंबर 2024 samachargate@gmail.com

जरूरी सूचना

सुधी पाठकों को सूचित किया जाता है कि समाचार गेट के नाम पर अगर कोई पत्रकार आपसे पैसे की मांग करता है तो कृपया 9212339503 पर संपर्क करें। समाचार गेट में कार्य कर रहे पत्रकार सिर्फ वही हैं जिनके नाम से खबर छपती हैं।

हरियाणा राजभवन में भव्य रूप से मनाया गया 59वां हरियाणा दिवस

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने बिखेरा जादू, राज्यपाल ने की कलाकारों को 5 लाख रुपए के इनाम देने की घोषणा

समाचार गेट/ब्यूरो

चंडीगढ़। 59वें हरियाणा दिवस के शुभ अवसर पर सोमवार को हरियाणा राजभवन चंडीगढ़ में भव्य तरीके से राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती वसंता दत्तात्रेय, मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुमन सैनी की गरिमामयी उपस्थिति रही। राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय, मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी सहित अन्य मंत्रीगणों ने दीप प्रज्वलित कर समारोह का आगाज़ किया।

राज्य स्तरीय समारोह के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने जादू बिखेर दिया। लोक कलाकारों तथा कॉलेज से आए छात्र - छात्राओं ने हिमाचल, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब की लोक-कलाओं का जीवंत प्रदर्शन किया। इनकी प्रस्तुतियां देखकर उपस्थितजन मंत्र मुग्ध नजर आए। राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने कलाकारों को 5 लाख रुपए के इनाम देने की घोषणा की। हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में राजभवन की साज-सज्जा देखते ही बन रही थी और रोशनी से सराबोर नजर आ रहा था।

समारोह में हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष श्री हरविंदर कल्याण, ऊर्जा मंत्री श्री अनिल विज, विकास एवं पंचायत मंत्री श्री कृष्ण पंवार, शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री श्री रणबीर गंगवा, सामाजिक न्याय, अधिकारिता, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं अंत्योदय (सेवा) मंत्री श्री कृष्ण कुमार बेदी भी उपस्थित रहे। इनके अलावा, विधानसभा उपाध्यक्ष श्री कृष्ण लाल मिड्ढा, खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री श्री राजेश नागर तथा युवा सशक्तिकरण एवं उद्यमिता राज्य मंत्री श्री गौरव गौतम भी मौजूद रहे। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री विवेक जोशी, राज्यपाल के सचिव श्री अतुल द्विवेदी सहित वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी व अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

संगठन को और अधिक मजबूत करना सदस्यता अभियान का लक्ष्य : दुष्यंत गौतम

अटल कमल जिला कार्यालय पर सदस्यता अभियान के लिए जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

पार्टी की विचारधारा से लोगों को जोड़ना सदस्यता अभियान का लक्ष्य : दुष्यत गौतम

समाचार गेट/ब्यूरो

फरीदाबाद। भाजपा ने जिले में सदस्यता अभियान को गति देने और जिले में 2.5 लाख नए सदस्य बनाने के लिए पार्टी जिला कार्यालय "अटल कमल" में जिले भर के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की एक कार्यशाला रखी गई, जिसमें सदस्यता अभियान को कैसे आगे बढ़ाया जाए, इसको अंतिम रूप दिया गया । जिला कार्यशाला में राष्ट्रीय महासचिव दुष्यंत गौतम ने संगठन के गठन की प्रक्रिया व सक्रिय कार्यकर्ता बनाने के बारे में विस्तार से जानकारी दी। राष्ट्रीय महासचिव श्री गौतम ने कहा कि हरियाणा में पार्टी संगठन को और अधिक मजबूत करने के लिए प्रदेश में 50 लाख नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है, मुझे पूर्ण विशवास है पार्टी के कार्यकर्ता इस लक्ष्य को पूर्ण करेंगे । श्री गौतम ने कहा की पार्टी की विचारधारा से लोगों को जोड़ना और पार्टी संगठन को मजबूत करना ही सदस्यता अभियान का मुख्य लक्ष्य है । हमारा देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है और देश लगातार विकास की राह पर तेजी से बढ़े इसके लिए हमें प्रयास करना है।

भाजपा जिला अध्यक्ष राजकुमार वोहरा, जिला संयोजक हुकमसिंह भाटी ने सदस्यता अभियान के लिए कार्यकर्ताओं को संबोधित किया । भाजपा जिला अध्यक्ष राजकुमार वोहरा ने कार्यशाला में राष्ट्रीय महामंत्री को आश्वस्त किया कि पार्टी ने 2.5 लाख नए सदस्य बनाने का जो लक्ष्य रखा है उसे पूरा किया जाएगा। बूथ से लेकर प्रदेश तक के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि और कार्यकर्ता इस अभियान में बढ़ चढ़ कर भाग लेकर जिले के लक्ष्य को जल्दी से जल्दी पूर्ण करने का कार्य करेंगे। श्री वोहरा ने बताया कि आज की कार्यशाला में पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को सदस्यता अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है। 5 और 6 नवम्बर को मंडल स्तर पर कार्यशालाएं आयोजित होंगी।

कार्यशाला में हरियाणा सरकार में मंत्री राजेश नागर, पूर्व उद्योग मंत्री मूलचंद शर्मा, पूर्व शिक्षा मंत्री सीमा त्रिखा, विधायक सतीश फागना, जिला अध्यक्ष राजकुमार वोहरा, पूर्व जिला अध्यक्ष एवं सदस्यता अभियान के प्रदेश टोली सदस्य गोपाल शर्मा, जिला सदस्यता अभियान के संयोजक चेयरमेन हुकमसिंह भाटी, किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष सोहनपाल सिंह, जिला महामंत्री मनोज वशिष्ठ, सुरेन्द्र जांगड़ा, पूर्व महामंत्री मूलचंद मित्तल, आर एन सिंह, सह संयोजक बिजेन्द्र नेहरा, रामेश्वर प्रजापति और अनीता शर्मा, जिला पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष, मोर्चों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता, प्रकोष्ठ विभागों के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता आदि उपस्थित रहे।

हरियाणा सरकार ने जिला लोक संपर्क एवं परिवाद समिति के अध्यक्षों की अधिसूचना की जारी

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी होंगे गुरुग्राम जिला लोक संपर्क एवं परिवाद समिति के अध्यक्ष

समाचार गेट/ब्यूरो

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने नये सिरे से जिला लोक संपर्क एवं परिवाद समितियों के चेयरमैनों की नियुक्ति की अधिसूचना जारी की है। मुख्य सचिव कार्यालय द्वारा जारी इस आशय की अधिसूचना अनुसार मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी को गुरुग्राम जिला लोक सम्पर्क एवं परिवाद समिति का अध्यक्ष बनाया गया है। इसी प्रकार, ऊर्जा मंत्री श्री अनिल विज को कैथल व सिरसा, विकास एवं पंचायत मंत्री श्री कृष्ण लाल पंवार को हिसार व रोहतक, उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह को नूंह व फरीदाबाद तथा शिक्षा मंत्री श्री महीपाल ढांडा को भिवानी व जींद जिलों की जिला लोक संपर्क एवं परिवाद समितियों के अध्यक्षों की जिम्मेवारी दी गई है।

इनके अलावा, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन मंत्री श्री विपुल गोयल को रेवाड़ी व पंचकूला, सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा को महेंद्रगढ़, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा को चरखी दादरी व झज्जर, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री श्री रणबीर गंगवा को अंबाला व करनाल, सामाजिक न्याय, अधिकारिता, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं अंत्योदय (सेवा) मंत्री श्री कृष्ण कुमार बेदी को पानीपत व यमुनानगर, महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती श्रुति चौधरी को फतेहाबाद तथा स्वास्थ्य मंत्री कुमारी आरती सिंह राव को पलवल जिलों की जिला लोक संपर्क एवं परिवाद समितियों के अध्यक्षों की जिम्मेवारी दी गई है। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले राज्य मंत्री श्री राजेश नागर को कुरुक्षेत्र तथा युवा सशक्तिकरण एवं उद्यमिता राज्य मंत्री श्री गौरव गौतम को सोनीपत जिले की जिला लोक संपर्क एवं परिवाद समितियों का चेयरमैन बनाया गया है।

नवनियुक्त मुख्य सचिव विवेक जोशी ने की मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से मुलाकात

समाचार गेट/ब्यूरो

चंडीगढ़। हरियाणा के नवनियुक्त मुख्य सचिव विवेक जोशी ने आज चंडीगढ़ स्थित मुख्यमंत्री आवास संत कबीर कुटीर में मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से मुलाकात की। नायब सिंह सैनी ने श्री जोशी को सफल कार्यकाल के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने विश्वास जताया कि टीम हरियाणा के तौर पर हम सब मिलकर प्रदेश के विकास के नए आयाम स्थापित करेंगे।

घर बैठे महिलाएं अब बनेंगी लखपति : केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर

केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने फ्लिपकार्ट द्वारा आयोजित कार्यशाला में की शिरकत

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को फ्लिपकार्ट द्वारा डिजिटल सक्षम बनाने की पहल

समाचार गेट/कृष्णा शर्मा

फरीदाबाद। केंद्रीय सहकारिता राज्य मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर ने कहा कि सरकार की तरफ से स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को एक नया ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराया गया है, जो उनकी कमाई का हिस्सा बनेगा। केंद्रीय सहकारिता राज्य मंत्री कृष्ण पाल गुर्जर ने आज फ्लिपकार्ट द्वारा आजीविका निर्माण फरीदाबाद की स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को डिजिटल सक्षम बनाने की पहल के लिए आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि शिरकत की।

केंद्रीय सहकारिता राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने कहा कि आज मुझे एक ऐसी कार्यशाला में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिसके द्वारा हमारे संगठन से जुड़ी महिलाओं को सशक्त स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने की कार्यशाला आयोजित की जाएगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के सबसे लोकप्रिय नेता हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह सोच और संकल्प है कि हमारे देश में आधी आबादी महिलाओं की है और जब तक देश की महिलाएं सशक्त आत्मनिर्भर और स्वभाव लंबी नहीं होगी तब तक देश सशक्त और आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। इसलिए उन्होंने इस देश की महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं।

उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिए शौचालय, मुफ्त गैस सिलेंडर, हर घर बिजली, हर घर नल और नल में जल, 5 लाख तक का निशुल्क इलाज आयुष्मान कार्ड द्वारा, महिलाओं को डिलीवरी के समय 24 हफ्ते का अवकाश, रिजर्वेशन देने और सेल्फ हेल्प ग्रुप को बढ़ाने की बात हो प्रधानमंत्री ने यह सब देशवासियों के विकास के लिए किया है। जब प्रधानमंत्री मोदी ने 2014 में इस देश की बागडोर संभाली तब देश में केवल एक करोड़ महिलाएं ही सेल्फ हेल्प ग्रुप से जुड़ी थी और आज 10 सालों में मोदी जी ने यह संख्या एक करोड़ से बढ़कर 10 करोड़ कर दी है। सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाओं को बैंकों से 8 लाख करोड़ का सब रोजगार के लिए लोन दिलाया। पहले एक सेल्फ हेल्प ग्रुप को 10 लाख तक का बिना गारंटी के लोन मिलता था लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी ने घोषणा की है कि सेल्फ हेल्प ग्रुप को अब 20 लाख तक का लोन मिलेगा इसके पीछे सोच यही है कि देश की महिलाओं को लखपति दीदी बनाना है और उसके लिए लक्ष्य भेद तय किया है कि आने वाले 5 सालों में 3 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाएंगे। उन्होंने कहा कि उत्पादों को कैसे देश के कोने कोने में पहुंचना है उसके लिए ई-कॉमर्स का होना जरूरी है क्योंकि आज दुनिया बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है और टेक्नोलॉजी का युग है। उसके माध्यम से हम भी अपने द्वारा निर्मित वस्तु को भेज सकते हैं उसके लिए फ्लिपकार्ट द्वारा इस कार्यशाला का आयोजन किया गया है। आज आपको जानने का मौका मिलेगा कि कैसे हम अपने उत्पाद को फ्लिपकार्ट के माध्यम से बाजार में भेज सकते हैं। कोई भी वस्तु बनाना तो आसान है लेकिन उसको बाजार में बेचना बहुत कठिन है। आज आप जो उत्पाद बनाएंगे उसकी दुनिया के बाजार में बेचने के लिए आपकी मदद फ्लिपकार्ट करेगा। आज महिलाएं किसी पर बोझ नहीं है ड्रोन दीदी योजना मोदी जी ने महिलाओं के लिए बनाई। ड्रोन की मदद से घंटे का काम अब महिलाएं मिंटो में कर रही है। ड्रोन दीदी भी अब लखपति दीदी बनने वाली है। यह तमाम तरह की योजनाएं मोदी जी इसलिए लेकर आए हैं कि अपने भारत देश की महिलाओं को सशक्त करना है। महिलाएं सशक्त होंगी तो परिवार भी सशक्त होगा और परिवार सशक्त होगा तो समाज और देश भी सशक्त बनेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने संकल्प लिया है कि देश को दुनिया का विकसित भारत बनाना है और विकसित भारत बनाने के लिए आमजन की भागीदारी भी होनी चाहिए जितनी अधिक हमारे देश की महिलाएं सशक्त और लखपति दीदी होगी उतना ही तेजी से भारत विकसित देश की ओर बढ़ेगा।

इस अवसर पर फ्लिपकार्ट समूह के मुख्य कॉर्पोरेट अधिकारी रजनीश कुमार ने कहा कि आज जो यह कार्यक्रम किया जा रहा है उसका उद्देश्य यही है कि सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाओं को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में डिजिटल इंडिया अभियान में जोड़ना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मिशन है कि कैसे गांव और शहर के लोगों को डिजिटल क्रांति से जोड़े। इसके लिए सरकार ने खासतौर पर स्वयं सहायता समूह की महिलाओं पर जोर दिया है, जो एक बड़ी वर्कफोर्स हैं। इसके लिए सरकार महिलाओं को घर बैठे रोजगार के साधन उपलब्ध करा रही है। साथ ही इन महिलाओं के प्रोडक्ट को ग्लोबल मार्केट में पेश करने की रणनीति पर काम कर रही है। इसके तहत राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ने ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म फ्लिपकार्ट से साझेदारी की है। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म फ्लिपकार्ट पर स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के बनाए गए प्रोडक्ट की मार्केटिंग की जिम्मेदारी होगी।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सीईओ जिला परिषद् सतबीर मान ने कहा कि भारत सरकार की यह एक प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों की आजीविका को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाना है। इसका मुख्य उद्देश्य गरीबी उन्मूलन के साथ-साथ महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। इस मिशन के तहत गरीब परिवारों को स्व-सहायता समूहों के माध्यम से संगठित किया जाता है, जिससे उन्हें आर्थिक गतिविधियों के लिए वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और विपणन सहायता प्राप्त होती है। जब तक महिलाओं का सशक्तिकरण नहीं होगा समाज सशक्त नहीं बन सकता। हाथ में पैसा होगा तभी महिलाएं अपने परिवार की देखभाल खुद कर सकेंगी। कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूह से गांव नरियाला से गीता देवी, गांव फतेहपुर बिल्लौच से प्रीति, तिगांव से राम सखी, गांव जाजरू से रेनू, जुन्हेड़ा गांव से भावना और तिगांव से पूनम शर्मा सभी महिलाओं ने बताया कि स्वयं सहायता समूह से जुड़ने से पहले उनके जीवन में कितनी कठिनाइयां थी और आज स्वयं सहायता समूह से जुड़कर वह खुद का रोजगार चला रही है और साथ ही अपने परिवार की आर्थिक मदद भी कर रही है।

विकास कार्यों को तय समय पर पूरा करें अधिकारी: विपुल गोयल

नागरिक उड्डयन मंत्री श्री विपुल गोयल ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

तय समय में काम पूरा हो, इसके लिए वैकल्पिक व्यवस्था पर भी विचार करें अधिकारी

समाचार गेट/संजय शर्मा

चंडीगढ़। हरियाणा के नागरिक उड्डयन मंत्री श्री विपुल गोयल ने विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए निर्देश दिए कि विभागीय योजनाओं को जल्द से जल्द पूरा करें और तय समय में काम पूरा करने में कोई परेशानी न आए, इसके लिए वैकल्पिक व्यवस्था पर भी विचार किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश में समय पर हवाई सेवाओं का और विस्तार हो और प्रदेशवासियों को बेहतर हवाई यात्रा सुविधा अपने निकट उपलब्ध हो सके, यही प्रदेश सरकार का उद्देश्य है।

बैठक के दौरान कैबिनेट मंत्री श्री विपुल गोयल ने अधिकारियों से कहा कि कोई भी कार्य को पूरा करने से पहले उसका फुल प्रूफ प्लान बनाएं, ताकि भविष्य में किसी समस्या का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि हमें प्रदेश में पैराजॉपिंग और एयरो स्पोर्ट्स को बढ़ावा देने जैसी योजनाओं पर काम करना चाहिए और फ्लाइंग क्लब की संख्या में और बढ़ोतरी पर भी विचार किया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों से यह भी कहा कि किसी भी एयरपोर्ट या पट्टी पर कोई विशेष कार्य के लिए जगह चिन्हित करने के साथ-साथ उद्देशय की पूर्ति हो, इसे भी कार्य योजना में शामिल करना चाहिए, ताकि उस जगह का सदुपयोग हो।

बैठक में विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने पीपीटी के माध्यम से हिसार, अम्बाला, भिवानी, करनाल, नारनौल आदि एयरपोर्ट/हवाई पट्टी से संबंधित योजनाओं पर कैबिनेट मंत्री श्री विपुल गोयल को विस्तार से जानकारी दी।

बैठक के दौरान एसीएस श्री सुधीर राजपाल, एडवाइजर श्री शेखर विद्यार्थी, एचसीएस श्री सतीश सिंगला, कैप्टन आरपी सिंह, विंग कमांडर प्रवीण कुमार डीडी, एचएडीसी के सीईओ जयदीप बल्हारा सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

मोबाइल फोन छीनने का आरोपी धरा

समाचार गेट/ब्यूरो

गुरुग्राम। पालम विहार क्राइम ब्रांच ने बाइक पर सवार होकर मोबाइल फोन छीनने के आरोपी को काबू किया है। पुलिस ने आरोपी से छीना हुआ एक मोबाइल बरामद कर केस दर्ज कर लिया। पुलिस पूछताछ व बरामदगी के लिए आरोपी को अदालत में पेश कर पुलिस हिरासत रिमांड पर लेगी। सेक्टर-10 थाना पुलिस को एक व्यक्ति ने शिकायत दी कि शनिवार को सरस्वती एनक्लेव, गुरुग्राम में बाइक पर सवार होकर आए दो युवक उससे मोबाइल फोन छीनकर फरार हो गए। पुलिस ने केस दर्ज कर कार्रवाई शुरु कर दी।

मामले में पालम विहार क्राइम ब्रांच ने एक आरोपी को गांव खांडसा, गुरुग्राम से काबू कर लिया। जिसकी पहचान विकास निवासी गांव खांडसा, गुरुग्राम के रूप में हुई। आरोपी पर छीना झपटी, चोरी करने के संबंध में दो केस गुरुग्राम में दर्ज हैं।

अपनी शादी, जन्मदिन और विवाह की वर्षगांठ की फोटो हमें भेजें।
नोट: मेल में नाम, पता और मोबाईल नंबर जरूर लिखें।
samachargate@gmail.com

प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक टोल फ्री नम्बरों की सूची

सीएम शिकायत पोर्टल	181
विद्युत सेवा	1912
पशु सेवा	1962
पुलिस सेवा	112, 100
अग्नि सेवा	101
एम्बुलैंस सेवा	102
यातायात पुलिस	103
आपदा प्रबंधन	108
चाइल्ड लाइन	1098
रेलवे पूछताछ	139
भ्रष्टाचार विरोधी	1031
रेल दुर्घटना	1072
सड़क दुर्घटना	1073
सी एम सहायता लाइन	1076
क्राइम सटायर	1090
महिला सहायता लाइन	1091
पृथ्वी भूकम्प	1092
बाल शोषण सहायता	1098
किसान काल सेन्टर	1551
नागरिक काल सेन्टर	155300
ब्लड बैंक	9480044444

जानकारी

सर्दियों में ड्राई होती है स्किन, ये टिप्स फॉलो कर पाएं जादुई निखार

सर्दियां आते ही आपको अपनी स्किन में काफी बदलाव नजर आएंगे जैसे कि स्किन में खिंचाव, सूखापन और ग्लो का चला जाना। सर्दियां आते ही स्किन ड्राई हो जाती है। सर्दियों में स्किन का सबसे ज्यादा ख्याल रखना पड़ता है। हम बदलते मौसम को तो नहीं रोक सकते, लेकिन अपनी लाइफस्टाइल में कुछ बदलाव कर स्किन को सुंदर और हेल्थी जरूर बना सकते हैं।

ऐसे रखें त्वचा का ख्याल?

सबसे पहले बहुत गर्म पानी से न नहाकर गुनगुने पानी से नहाएं। गर्म पानी स्किन के नेचुरल ऑयल्स हटा देता है, जिसकी वजह से स्किन बहुत ड्राई हो जाती है। अगर आपकी स्किन ड्राई ही है तो चेहरे और शरीर पर साबुन का इस्तेमाल कम करें। साबुन आपकी स्किन को काफी नुकसान पहुंचाता है। फेस वॉश या बॉडी वाश का पीएच (पोटेंशियल ऑफ हाइड्रोजन) आपकी स्किन के पीएच के समान होता है, जिसके इस्तेमाल से ड्राइनेस काम होती है। फिर भी अगर आपको चेहरे पे काफी ड्राइनेस महसूस हो तो अपने चेहरे को साबुन या फेसवाश की जगह क्लींजिंग मिल्क से साफ करें, इसके बाद एक अल्कोहल फ्री टोनर और मॉश्चराइजर का भी इस्तेमाल करें।

अगर आपकी स्किन ड्राई है तो शरीर के लिए एक अच्छा बॉडी लोशन या बॉडी बटर का इस्तेमाल करें और चेहरे के लिए एक अच्छा मॉइस्चराइजर पास रखें। एक अच्छा मॉइस्चराइजर या बॉडी लोशन खरीदते समय याद रखें कि उसमें शीया बटर या कोकोआ बटर, अच्छे नेचुरल ऑयल्स जैसे बादाम, जैतून और ग्लिसरीन हों।

- यदि आपकी स्किन ऑयली है तो भी उसमें पानी की कमी होती है। इस समय आपके चेहरे को एक जेल बेस्ड मॉइस्चराइजर की जरूरत होती है, जिसमें ऑयल न हो पर अच्छे मॉइस्चराइजिंग एजेंट्स जैसे अलोवेरा, ग्लिसरीन, हैलुरोनिक एसिड, कुकुम्बर और वाटरमेलन के गुण हों। आप जितना पानी पीएंगे, आपकी स्किन उतनी हाइड्रेटेड रहेगी। भले ही आपको सर्दियों में कम प्यास लगती हो, पर बदलते मौसम में आपको कम से कम आठ गिलास पानी पीना आवश्यक है। बाहरी चीजों की बजाय पौष्टिक खाना खाएं। फल और सब्जियों का अधिक से अधिक प्रयोग करें।
- कॉस्मेटोलॉजिस्ट अभिप्रिया मिश्रा कहती हैं कि जिस तरह हमारा सांस लेना जरूरी है, उसी तरह स्किन का सांस लेना भी जरूरी है। हमारी स्किन के ऊपर एक डेड स्किन की परत बन जाती है, जिसकी वजह से हमारी स्किन सांस नहीं ले पाती। डेड सेल्स की वजह से हमारी स्किन सूखी दिखती है और उसमें ग्लो नहीं आता। इन डेड सेल्स को समय-समय पर हटाना बहुत जरूरी होता है, इसे हम एक्सफोलिएशन कहते हैं।
- इसके लिए हफ्ते में दो बार फेस स्क्रब का इस्तेमाल करें। स्किन का हेल्दी होना बहुत जरूरी है, क्योंकि वो हमारे शरीर का एक कवच है। इसलिए सिर्फ सुंदर दिखने के लिए स्किन का ध्यान रखना जरूरी नहीं है। जितना स्वस्थ हमारा शरीर होगा उतनी ही स्वस्थ हमारी स्किन होगी।

बहुत ज्यादा मुलायम बिस्तर पर सोने से आपके शरीर को सही सपोर्ट नहीं मिलता, जिस कारण कई नसों पर दबाव बढ़ता है और शरीर का पोश्चर बिगड़ता है। ऐसे में जमीन पर सोते हैं, तो आपको इन समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। जानें इसके फायदे-

जमीन पर सोकर आप भी पा सकते हैं पीठ और कमर दर्द से छुटकारा

अगर आप अक्सर पीठ, कमर और कंधों के दर्द से परेशान रहते हैं, तो इसका कारण आपका बिस्तर हो सकता है। मुलायम और स्पंजी बिस्तर पर सोने से कई बार शरीर का पोश्चर बिगड़ जाता है, जिसके कारण शरीर के अंगों में दर्द शुरू हो जाता है। सोने की आदर्श स्थिति ऐसी मानी जाती है कि आपका बिस्तर सख्त और सीधा होना चाहिए। लंबे समय तक मुलायम बिस्तर पर सोने से आपको कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं और रीढ़ की हड्डी को नुकसान पहुंच सकता है।

पीठ और कमर दर्द को दूर करने और बॉडी का पोश्चर सही करने के लिए जमीन पर सोना आपके लिए ज्यादा फायदेमंद हो सकता है। हालांकि सर्दियों में जमीन ठंडी होती है, इसलिए अगर आप चाहें, तो बिना मोटा गद्दा बिछाए बेड पर भी सो सकते हैं। प्लास्टिक के पट्टों वाले फोल्डिंग बेड पर सोना भी आपके स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं माना जा सकता है, क्योंकि ये पट्टे बेहद लचीले होते हैं, जिससे आपके शरीर को सही पोश्चर नहीं मिल पाता है। जमीन पर सोना आपके लिए कई मायनों में फायदेमंद हो सकता है। यहां हम आपको बता रहे हैं 5 फायदे।

बॉडी का पोश्चर रहेगा सही

सख्त सतह पर सोना आपके लिए इसलिए फायदेमंद होता है क्योंकि इससे आपका बॉडी पोश्चर सही रहता है। हमारे शरीर का प्रत्येक अंग महत्वपूर्ण है और नाजुक है। ऐसे में जब आप आड़ा-टेढ़ा सोते हैं, तो कुछ खास अंगों पर शरीर का वजन बढ़ जाता है, जिससे ये अंग दब जाते हैं। रीढ़ की हड्डी वैसे तो काफी मजबूत होती है, मगर लंबे समय तक गलत पोश्चर में लेटने से इसका आकार बदल सकता है और आपको कई तरह की समस्याएं हो सकती हैं।

पीठ और कमर दर्द से छुटकारा

पीठ और कमर में दर्द का कारण भी अक्सर गलत बॉडी पोश्चर होता है। नर्म-मुलायम बिस्तर आपके शरीर को आराम तो पहुंचाते हैं, मगर इन पर सोने के दौरान आपके शरीर को सही सपोर्ट नहीं मिलता है। आपके शरीर के सभी महत्वपूर्ण अंग आपके सीने से लेकर पेट के छोर तक मौजूद होते हैं, जिसके कारण शरीर के इस हिस्से का भार सबसे ज्यादा होता है। ऐसे में जब आप मुलायम बिस्तर पर सोते हैं, तब बिस्तर पर आपके शरीर का ऊपरी और निचला हिस्सा ऊपर रह जाता है, जबकि बीच का हिस्सा धंस जाता है। इसी पोजीशन में देर तक रहने से नसें और मांसपेशियों में तनाव उत्पन्न होता है और ब्लड सर्कुलेशन प्रभावित होता है। इसलिए दर्द होने लगता है। जबकि जमीन पर सोने के दौरान शरीर को सही सपोर्ट मिलता है, इसलिए ऐसी समस्याएं नहीं होती हैं।

सायटिका के दर्द से राहत

सायटिका एक प्रकार का दर्द होता है, जो सायटिका नसों में दबाव के कारण होता है। ये नस आपके कमर और हिप्स से होते हुए आपके पैरों में की तरफ जाती है। जमीन पर सोने से आपको सायटिका के दर्द से छुटकारा मिल सकता है। आमतौर पर सायटिका के मरीजों के लिए मुलायम बिस्तर पर सोना नुकसानदायक माना जाता है, क्योंकि ये दर्द को बढ़ा सकता है।

जमीन पर सोने से पहले जरूरी सावधानियां

- जमीन पर सोने से पहले उस पर कोई चादर, चटाई या दरी आदि जरूर बिछाएं।
- सर्दियों मे आपको जमीन पर बिना मोटा मैट्रेस बिछाए नहीं सोना चाहिए, वरना आपको ठंड लग सकती है।
- यह जरूर तय कर लें कि आप जिस कमरे में सो रहे हैं उस कमरे में रेंगने और उठने वाला कोई जीव-जंतु न प्रवेश कर पाए।
- गंदी, धूल भरी जगह पर कभी भी जमीन में न सोएं।
- छोटे बच्चों, बूढ़े लोगों को जमीन पर न सुलाएं, क्योंकि उनमें मूवमेंट ज्यादा होता है, जिससे वो बिस्तर से बाहर जा सकते हैं।

जमीन पर बैठकर खाना खाने के फायदे

क्या आप जानते हैं कि जमीन पर बैठकर खाना खाने से सेहत को कई तरह के फायदे पहुंचते हैं। क्योंकि जमीन पर हम जिस तरह से एक पैर को दूसरे पर रखकर बैठते हैं, वो एक आसन की मुद्रा होती है। इस मुद्रा में बैठकर खाना खाने से भोजन का पूरा फायदा मिलता है और पाचन क्रिया भी बेहतर रहती है।

- जमीन पर बैठकर खाना खाने से शरीर मजबूत होता है। इस मुद्रा में बैठने से पीठ के निचले हिस्से की मांसपेशियों, पेल्विस और पेट के आस-पास की मांसपेशियों मे खिंचाव होता है। जिससे असहजता और दर्द की शिकायत में आराम मिलता है।
- जमीन पर बैठकर खाने के दौरान आप पाचन की नेचुरल अवस्था में होते हैं। इससे पाचक रस बेहतर तरीके से अपना काम कर पाते हैं।
- परिवार के सभी सदस्य जब एक साथ जमीन पर बैठकर खाते हैं, तो उनके बीच का संबंध भी मजबूत बनता है। इस मुद्रा में बैठने से शरीर की कई तकलीफें दूर हो जाती हैं। आराम मिलने से खाने का स्वाद भी दोगुना हो जाता है।
- जमीन पर बैठकर खाना खाने से वजन संतुलित रखने में भी मदद मिलती है।
- जमीन पर बैठकर खाना खाते समय आप सिर्फ खाना ही नहीं खाते हैं बल्कि यह एक आसन की मुद्रा भी है। ये मुद्रा आपको शांत रहने में मदद करती है। इससे रीढ़ की हड्डी को भी आराम मिलता है।
- जमीन पर बैठकर खाने से हमारा बॉडी-पोश्चर भी बेहतर होता है। इससे व्यक्तित्व में भी निखार आता है।

सेहत

कॉफी के सामने फीका पड़ जाएगा ब्यूटी पार्लर का महंगा फेशियल

फॉलो करें ये टिप्स

सुंदर और बेदाग चेहरे की चाहत हर किसी को होती है। चेहरे पर निखार लाने के लिए लोग ब्यूटी पार्लर में हजारों रुपए उड़ा देते हैं। पर आपको शायद ही पता हो कि घर में कॉफी के इस्तेमाल से आप ब्यूटी पार्लर जैसा फेशियल पा सकती हैं। कॉफी एंटी एजिंग को भी कम करती है। आइए जानते हैं कॉफी से कैसे फेस पैक तैयार किया जाता है और ये किस तरह आपके चेहरे पर निखार लाती है।

कॉफी का फेशियल लाता है चमक

चेहरे पर चमक लाने के लिए वैसे तो मार्केट में एक से बढ़कर एक ब्यूटी प्रोडक्ट मिलते हैं, परंतु इनके साइड इफेक्ट भी हो सकते हैं। चेहरे पर कैसे भी दाग-धब्बे हों, कॉफी से बना ये फेशियल लगाकर आप चेहरे को बिल्कुल बेदाग और फ्रेश बना सकती हैं। चूंकि कॉफी चेहरे से डेड स्किन हटाने का काम करती है, जिससे त्वचा सॉफ्ट होती है और चेहरे की चमक भी बढ़ती है।

कॉफी फेशियल के लिए सामग्री

एक कटोरी में 1 चम्मच कॉफी पाउडर लें। अब उसमें थोड़ा सा चावल का आटा मिलाएं। चावल का आटा आप मार्केट से खरीद सकती हैं। आप चाहें तो चावल को पीसकर भी उसका आटा बना सकती हैं। अब इसमें 2 चम्मच कच्चा दूध, एक चम्मच नींबू का रस और एक चम्मच शहद मिलाएं।

इन सारी सामग्रियां अच्छे से मिलाकर चेहरे और गर्दन पर स्क्रब करें। करीब 10 मिनट तक चेहरे के प्रेशर प्वॉइंट पर स्क्रब करते हुए मसाज करें। अब सादे पानी से चेहरे को धो लें। आप बची हुई सामग्री का इस्तेमाल फेस पैक की तरह भी कर सकती हैं।

बची हुई सामग्री को चेहरे पर फेस पैक की तरह लगाएं और सूखने के बाद पानी से धो लें। हफ्ते में 4 दिन ये पैक लगाने से आपका चेहरा बिल्कुल खिल उठेगा।

सर्दी के साथ लौट रहा जुकाम, ये आसान घरेलू नुस्खे रखेंगे आपका ख्याल

सर्दी का मौसम आ गया है और इसमें सबसे ज्यादा जुकाम के मामले सामने आते हैं। इसमें निरंतर छींकें आने से सिरदर्द और बदन दर्द बना रहता है। मानसून से सर्दी आने तक लोग इसके कई-कई बार शिकार होते हैं। क्या आप जानते हैं जुकाम की वजह बनने वाले कोल्ड वायरस 200 किस्म के होते हैं।

इस अवस्था में पहले 24 घंटे काफी निर्णायक होते हैं। क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन के वायरलॉजिस्ट प्रोफेसर जॉन ऑक्सफोर्ड इसके शुरुआती स्टेज और इससे मुक्ति पाने के तरीकों के बारे में बताते हैं। प्रो. ऑक्सफोर्ड ने बताया कि जुकाम का कारण बनने वाले ये वायरस कभी भी और कहीं भी आपको घेर सकते हैं। एक बार सांस लेने पर 10,000 से भी ज्यादा वायरस निमंत्रण दे सकते हैं, लेकिन इनमें से करीब 100 ही ऐसे होते हैं, जो नाक और गले के एपीथेलियन सेल्स पर वार करते हैं। इनसे बचने के लिए आपको कई विशेष बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

कैसे पाएं राहत?

- विशेषज्ञों का दावा है कि शहद और नींबू का मिश्रण जुकाम मे राहत देने में काफी मददगार है।
- कोई भी काम करने से पहले साबुन से अच्छी तरह हाथ धोएं। किसी भी पीड़ित व्यक्ति के संपर्क में आने से बचें।
- साल 2000 में हुई एयूएस स्टडी के मुताबिक, इस कंडीशन में चिकन सूप सबसे अच्छा खाद्य पदार्थ माना जाता है। ये जुकाम में जल्द से जल्द राहत देने में कारगर है।
- इस दौरान ऐसी चीजों का सेवन करें, जो विटामिन सी युक्त हों। इसके साथ ही अगर आपके पार्टनर को जुकाम है तो उसके साथ बेड शेयर न करें।

टाइम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। अपना कार्य दूसरों के सहयोग से बना लेंगे। प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। किसी अपने को सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-2-3-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): व्यर्थ के आडम्बरों से बचें। कार्यक्षेत्र में विवाद बढ़ेंगे। परिवार में किसी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। मानसिक तनाव में बढ़ोतरी होगी। किसी का अभद्र व्यवहार खिन्नता व तनाव बढ़ायेगा। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। शुभांक-5-7९-9

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। आय के अच्छे योग बनेंगे। संतान की उन्नति के योग है। शुभांक-2-5-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। मनोविनोद बढ़ेंगे। व्यापारिक्य का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। संतान की उन्नति के योग है। शुभांक-2-6-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): व्यर्थ की भाग-दौड़ से बचें। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती है। मानसिक व्यथा व संतान के कारण परेशानी होगी। आवेश में आना आपके हित में नहीं होगा इसलिए व्यवहार व वाणी पर नियंत्रण रखें। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। पारिवारिक विवाद टालें। शुभांक-1-3-4

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। किसी से कहा सुनी न हो वही ध्यान रहे। अपना कार्य दूसरों के सहयोग से बना लेंगे। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। शुभांक-4-5-7

तुला (रा री रू रे रो ता ती तू ते): अपने संघर्ष में स्वयं को अकेला महसूस करेंगे। विशेष परिश्रम से ही अभिष्ट कार्य सिद्ध होंगे। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। बनते हुए कार्यों में बाधा आएगी। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। शुभ कार्यों में अड़चनें और परिवार के बुजुर्ग-जनों से मतभेद रहेगा। शुभांक-3-5-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): आर्थिक उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। रोजगार में तरक्की मिलेगी। जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है। आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। शत्रुओं को पराजय होगी। कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होंगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। शुभांक-3-6-8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): उच्च मनोबल रखकर कार्य करें, सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। शुभांक-2-4-6

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): आत्मीय जनों से मिलन होगा। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बनेगी। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। बुद्धितत्व की सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। शुभांक-6-7-9

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): घर-परिवार में प्रसन्नता व सहयोग का वातावरण बनेगा। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। व्यापारिक्य का अवसर आ सकता है। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों का समागम भी। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-2-4-5

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): शांतिपूर्वक नित्य कार्य करें। संतान की प्रगति से संतोष होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ में समय व्यतीत होगा। श्रम अधिक करना पड़ सकता है। वरिष्ठजनों से मतभेद उभर सकते है। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। पारिवारिक तनाव, अलगाव का सामना करना पड़ सकता है। शुभांक-1-3-5

काकुरो पहेली - 3340

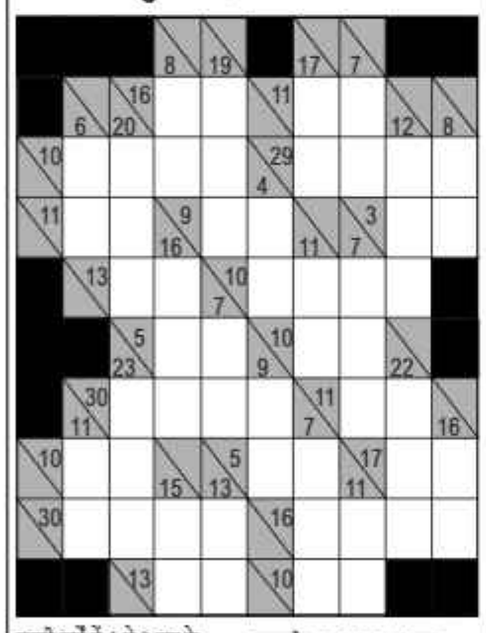

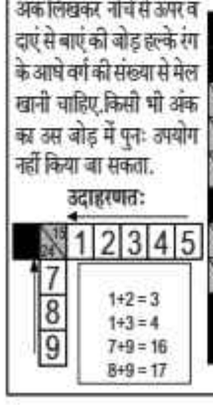

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए,किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

1+2=3
1+3=4
7+9=16
8+9=17

काकुरो - 3339 का हल

लॉफिंग ज़ोन

एक बार चमन अपनी नवविवाहिता पत्नी के साथ फिल्म देखने गया। वहाँ भी उसकी पत्नी हर समय उससे बातचीत में ही लगी रही। तंग आकर उसने इंटरवेल में पत्नी के लिए पान खरीदा और उसे दे दिया।

पत्नी बोली- एक पान तुम भी ले लो?

चमन बोला- मैं तो बिना पान खाए भी खामोश रह सकता हूँ।

□ □ □

चिंटू (चमन से)- क्या तुम बता सकते हो कि एक आदमी नेता बनने के बाद क्या खास काम करता है?

चमन- चुनाव के पहले वह अपना हाथ हिलाता है और बाद में जनता के विश्वास को।

□ □ □

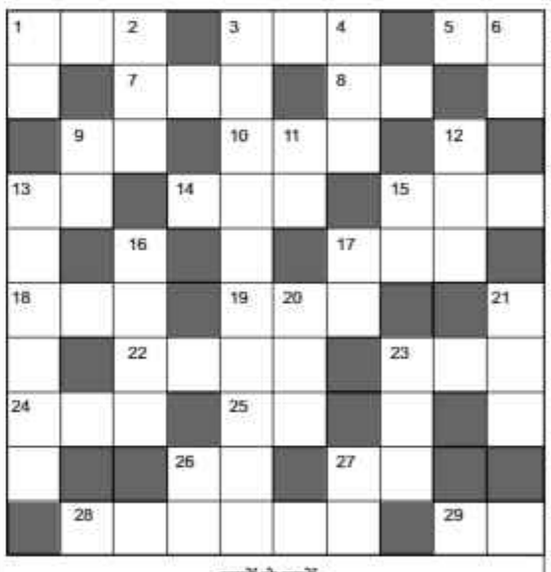

कवि सम्मेलन के दौरान एक व्यक्ति अपने पास की कुर्सी पर बैठे कवि से बोला- कविवर, आपके पास पाँच सौ के छुट्टे है क्या?

कविवर (जिनके जेब में फूटी कौड़ी भी नहीं थी) इत्मीनान से बोले- छुट्टे तो नहीं हैं! किंतु.... यह पूछकर आपने जो मेरा मान बढ़ाया है, उसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ।

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 3340

बायें से दायें:-

१. मनोजकुमार, साधना की 'तुम बिन जीवन कैसे बीता' गीतवाली फिल्म-३
३. 'चली सात फेरे लेकर' गीत वाली मिलिंद सोमण, विक्रम फिल्म-३
५. अभिषेक, उदय चोपड़ा, जॉन अब्राहम, रिमी सेन, ईशा देओल की फिल्म-२
७. 'हो जाता है प्यार' गीत वाली अमिताभ, हेमा मालिनी और प्राण की फिल्म-३
८. अनिलकपूर, जैकीश्रॉफ, अजय, मनीषा, रेखा, सोनाली, माधुरी की फिल्म-२
९. 'ना वादा करो हैं' गीत वाली सुनील शेट्टी, सोमी अली की फिल्म-२
१०. अनिलकपूर, पूनम ढिल्लों की 'मिली तेरे प्यार की छाँव' गीत वाली फिल्म-३
१३. शाहरुख, चंद्रचूड़, ऐश्वर्या फिल्म-२
१४. अजय देवगन, रितेश, मनीषा की 'खामस' गीत वाली फिल्म-३
१५. राजेंद्रकुमार, साधना की फिल्म-३
१७. फिल्म 'दोस्ताना' की नायिका थी-३
१८. 'मेरे भैया मेरे चंदा' गीत वाली राजकुमार, धर्मेन्द्र की फिल्म-३
१९. शशिकपूर, जीनत अमान की एक फिल्म-३
२२. बी. आर. इशारा निर्देशित विजय अरोड़ा, रीनाराय की १९७२ की एक फिल्म-४
२३. राजेंद्रकुमार, वहीदा की 'दिले बेताब को सीने से' गीत वाली फिल्म-३
२४. अनिल, श्रीदेवी, रवीना की फिल्म-३
२५. आमिरखान, मनीषा की फिल्म-२
२६. १९७१ में बनी जीतेंद्र, डिम्पल कपाड़िया की श्याम रल्हन निर्देशित फिल्म-२
२७. 'मिजाजे गिरामी दुआ है आपको' गीत वाली फिल्म-२
२८. फिल्म 'जॉनसीन' में नायक-४,२
२९. शाहिद कपूर, करीना की 'दिल मेरे ना और' गीत वाली फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. 'बंदा ये बिंदास है' गीत वाली फिल्म-२
२. विकास भल्ला, काजोल की फिल्म-३
३. 'हाय हाय ये मजबूरी' गीत वाली मनोज कुमार जीनत अमान की फिल्म-२,३,२,३
४. फिल्म 'घर में स्याम गली में हम' में गोविंदा के साथ नायिका कौन थी-३
६. आफताब शिवदासानी, उर्मिला मातोंडकर की फिल्म-२
९. 'बड़ी मुश्किल है खोया मेरा दिल है' गीत वाली शाहरुख, माधुरी की फिल्म-३
११. फिल्म 'इंडियन' में नायक कौन था-२
१२. मनोजकुमार की राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत फिल्मों में उनके किरदार का नाम है?-३
१३. राकेश, जया भादुड़ी की 'बस्ता गई रे ठगा गई' गीत वाली फिल्म-२,१,३
१५. अक्षय, सुनील, जैकी, रवीना, लारा दत्ता की फिल्म-२
१६. जैकी श्रॉफ, फराह की फिल्म-४
१७. 'शीशी भरी गुलाब की' गीत वाली रणधीरकपूर, बबीता की फिल्म-२
२०. करण दीवान, स्वर्णलता की 'अंखियां मिलाके जिया' गीत वाली फिल्म-३
२१. 'चलो दिलदार चलो' गीत वाली राजकुमार, मीनाकुमारीकी फिल्म-३
२३. हिमालय, भाग्यश्री की 'मुझको पायल नाम दिया' गीत वाली फिल्म-३
२६. 'आज की रात नया चाँद' गीत वाली मनोज, धर्मेन्द्र, सायरा बानो की फिल्म-२
२७. अजय देवगन, ट्विंकल खन्ना की 'नैनों में महबूब के' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 3339

सूडोकु -3340

9		2		4	1	7		
1						6		
5	7	3	2				4	
				9	4	8		
4		7				9		6
		5	8	3				
	3				6	5	9	1
		6						7
		9	1	8		2		4

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -3339 का हल

5	4	9	1	8	3	2	6	7
1	2	6	4	9	7	3	5	8
3	8	7	5	2	6	1	4	9
8	7	1	3	4	2	6	9	5
9	5	3	6	1	8	7	2	4
2	6	4	7	5	9	8	1	3
4	3	5	2	7	1	9	8	6
6	9	2	8	3	4	5	7	1
7	1	8	9	6	5	4	3	2

शब्द पहेली - 3340

बाएं से दाएं

1.पवनपुत्र,हनुमान-3,3
5.मजार-4
8.बगीचा (अंग्रेजी में-2)
9.तहजीब,तमीज-3
10.सत्य,तेज-2
11.पतंगा-4
12.ईसाई साध्वी-2
14.इंकार करना-4
16.उत्तम,आदर्शवादी-3
18.रोमांच,उद्वेग-4
20.पागलपन,सनक-5
23.पालन-पोषण-5
26.आनंद लेना-2,2
27.बेईमानी,अमानत में खयानत-3
29.अप्रधान,गौण-4
30.ठाठ-बाट-2
32.अति काला,एक प्रकार की लकड़ी-4
33.रहस्य-2
35.गरुड़ जो रावण से लड़ा था-3
36.कमरा,रूम-2
37.जल में रहने वाला-4
38.धर्म के उपदेश देनेवाला-6

ऊपर से नीचे

1.पलायन करने वाला-6
2.जंगल-2
3.दांत से छोटे टुकड़े करना-4
4.जिव्हा,जीभ-3
5.घर,भवन-3
6.यात्री गाड़ी-2
7.चौबीस घंटे का समय-4
11.परीक्षण करना-4
13.भीगा हुआ-2
15.खोजना-4
17.उपस्थिती-3
18.रोमांच,उद्वेग-4
19.संपत्ति-2
21.उचित,सही-3
22.पंख,पराया-2
24.देश निर्वासन-4
25.अंगरक्षक-3,3
27.हाथी-4
28.मद,सरूर-2
29.अनुसार,समान-4
31.निगाह,दृष्टि-3
32.हथियार-3
34.पानी,नीर-2
36.सिगरेट का धुआं खींचना,सुट्टा-2

शब्द पहेली -3339 का हल

लव जिहाद के मामलों को लेकर कमिश्नर से मिले हिन्दू संगठन

समाचार गेट/ब्यूरो

फरीदाबाद। फरीदाबाद में लगभग दो महीने में सात लव जिहाद के मामले सामने आने के बाद पीड़ित परिवारों के साथ हिंदू संगठन आक्रोश में नजर आ रहा है। इसके चलते सोमवार को पीड़ित परिवारों के साथ हिंदू संगठनों हिन्दू जागरण मंच से जिलाध्यक्ष योगेंद्र, विभाग संयोजक बजरंग दल अशोक बाबा, जिला संयोजक पुनीत वशिष्ठ बजरंग दल, हिन्दू जागरण मंच से अरुण, मनोज, लखेरा, विश्व हिन्दू परिषद से अमन, वेदवाल, सतीश आदि ने एकत्रित होकर फरीदाबाद के पुलिस कमिश्नर कार्यालय में पुलिस कमिश्नर को ज्ञापन सौंपा और दोषियों के खिलाफ उचित करने कार्रवाई की मांग की है। जब से सुप्रीम कोर्ट ने लव जेहाद को मान्यता प्रदान की है, तब से ये शब्द चारों तरफ चर्चा और बहस का ज्वलंत विषय बना हुआ है। इसलिए अब खबरदार में हम लव जिहाद के जिन्न का संपूर्ण विश्लेषण करेंगे। लव जिहाद का ये जिन्न केरल में एक हिंदू लडक़ी और एक मुस्लिम लडक़े के प्रेम विवाह से पैदा हुआ है। जब एक धर्म विशेष को मानने वाले दूसरे धर्म की लड़कियों को अपने प्यार के जाल में फंसाकर उस लडक़ी का धर्म परिवर्तन करवा देते हैं, तो इस पूरी प्रक्रिया को लव जिहाद कहा जाता है। फरीदाबाद में 2 माह में आठ लव जिहाद के मामले सामने आए हैं जिनमें से एक लडक़ी बालिक है,

बाकी सभी बच्चियां नाबालिग है। हैरत की बात है कि लव जिहाद में फंसी सभी बच्चियां फरीदाबाद से गायब है। लेकिन पुलिस अभी तक किसी को भी बरामद या आरोपी को गिरफ्तार नहीं कर पाई है। पीड़ित परिवार समेत हिंदू संगठन पुलिस कमिश्नर से मिलकर मामले को गंभीरता से लेते हुए बच्चियों की बरामद की। आरोपियों गिरफ्तारी की मांग करने के लिए ज्ञापन देने के लिए पहुंचे थे, जहां पर एसीपी सेंट्रल विष्णु प्रसाद ने पीड़ित परिवारों के साथ आए हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं की बात सुनी और मामले को गंभीरता से लेते हुए आठों मामले के संबंधित थाना प्रभारी को फोन मिलाकर इसमें त्वरित कार्यवाही करते हुए गायब हुई बच्चियों की बरामदगी के साथ-साथ आरोपियों की गिरफ्तारी के आदेश दिए। वहीं एसीपी विष्णु प्रसाद से मिलने के बाद न केवल हिंदू संगठन बल्कि पीड़ित परिवार भी संतोष जनक नजर आया, जिन्होंने मीडिया के सामने बात करते हुए कहा कि अब उन्हें उम्मीद है कि पुलिस मामले में गंभीरता से काम करेगी। हिंदू संगठन के कार्यकर्ता सुशील ने बताया कि आठ मामले जो सामने आए हैं, सभी फरीदाबाद के हैं जो की फरीदाबाद के अलग-अलग थानों में रजिस्टर्ड हैं। इन आठ मामलों में सात नाबालिक और एक बच्ची बालिक है। सभी को लव जिहाद में फंसाने वाले मुस्लिम लडक़े हैं, जिन्होंने लव जिहाद में फंसाकर लड़कियों को गायब कर रखा है। वह चाहते हैं कि पुलिस इस मामले में जल्द एक्शन ले और आरोपियों को गिरफ्तार करें। वही मामले में पीड़ित बच्ची की मां ने बताया कि वह अपनी बेटी के गायब होने के बाद पुलिस थाने के चक्कर काट कर थक चुके हैं, जिस पर उन्हें शक होता है, वह उसके बारे में पुलिस को बताते हैं, लेकिन पुलिस उनसे पूछताछ तक नहीं करती। कई बार पुलिस वाले उनसे कहते हैं कि बच्ची को खोजने के लिए गाड़ी करके लाओ, तब बच्ची को खोजने के लिए चलेंगे। अब उन्हें एसीपी से मिलकर उम्मीद है कि अब पुलिस उनके मामले में उचित कार्रवाई करेगी।

दीपावली मनाने गया परिवार, चोरों ने आभूषणों पर किया हाथ साफ

समाचार गेट/ब्यूरो

फरीदाबाद। चोरों सेक्टर-21डी के एक मकान में पांच-छह लाख रुपए के गहने चुरा लिए। परिवार के लोग दीपावली का पर्व मनाने के लिए सोनीपत गए थे, जब वह वापिस आए तो उन्हें चोरी की घटना का पता लगा, जिसकी सूचना उन्होंने पुलिस को दी। पुलिस मामले की जांच कर रही है। पुलिस ने पीड़त की शिकायत पर मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। अंकुश रावत ने बताया कि दीपावली मनाने के लिए अपने परिवार सहित सोनीपत गए हुए थे। इसी दौरान चोरों ने घर में घुसकर सोने के आभूषण चुरा लिए। जिसमें दो मंगलसूत्र, एक अंगूठी, कान की बालियां, दो कंगन यह सब अलमारी तोडक़र चुराकर लेकर चले गए। उन्होंने कहा कि इस घटना की चार दिन बाद जानकारी ली। जब सोनीपत से वह वापस आए। घर में का ताला टूटा मिला। घर के अंदर का सारा सामान बिखरा था। उन्होंने तुरंत डायल 112 पर फ़ोन कर पुलिस को सूचना देकर मौके पर बुलाया। उन्होंने बताया कि घर दो फ्लोर का है। अपने परिवार सहित सेकेंड फ्लोर पर रहते हैं। फर्स्ट फ्लोर पर कोई नहीं रहता। ग्राउंड फ्लोर पर मकान मालिक का कुछ सामान रखा हुआ है। लेकिन वो भी कभी-कभी आते हैं। अंकुश रावत ने बताया कि वो मूलरुप से सोनीपत के रहने वाले हैं और उनका कुछ परिवार सोनीपत में ही रहता है। दीपावली के मौके पर सभी परिवार सहित दिवाली मनाने के लिए सोनीपत गए हुए थे। उन्होंने बताया फरीदाबाद में एक निजी स्कूलों में जॉब करते हैं। इसलिए फरीदाबाद में परिवार के साथ रहते हैं।

पेंशनर्स के लिए नवंबर माह में जीवन प्रमाण पत्र जमा करवाना अनिवार्य : संजय छौंकर

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। जिला खजाना अधिकारी संजय छौंकर ने जानकारी देते हुए बताया कि हरियाणा सरकार से सेवानिवृत सभी पैंशनर्स जो खजाना कार्यालय, फरीदाबाद व उप-खजाना कार्यालय, बल्लभगढ़ से अपनी पेंशन प्राप्त कर रहे हैं। उन पैंशनरों को नवंबर माह में जीवन प्रमाण पत्र जमा करवाना अनिवार्य होगा। खजाना अधिकारी संजय सिंह छौंकर ने बताया कि सभी पैंशनर अपने नाम के पहले अक्षर के अनुसार निर्धारित तिथि को खजाना कार्यालय में आकर अपने जीवन प्रमाण पत्र जमा करा सकते है। उन्होंने बताया कि पैंशनर अपने साथ पी.पी.ओ बुक, आधार कार्ड, मोबाइल फोन साथ ले कर आएं। उन्होंने बताया कि ए से जी तक के अक्षर से शुरु होने वाले नाम के पैंशनर 4 से 8 नवंबर को अपना जीवन प्रमाण पत्र जमा करवा सकते है। इसी प्रकार से एच से पी तक अक्षर वाले 11 से 14 तक, क्यू से एस तक अक्षर के पैंशनर 18 से 22 तक तथा टी से जेड अक्षर तक के नाम वाले पैंशनर 25 से 29 तक अपना जीवन प्रमाण पत्र जमा करवा सकते है। पैंशनर स्मार्ट फोन का उपयोग कर फेस अंथेनटिकेशन तकनीक के माध्यम से भी डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र दे सकते है।

एंड्रॉयड मोबाइल में डाउनलोड करके फेस ऑथेंटिकेशन एप्लीकेशन तकनीक के माध्यम से भी डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र दे सकते है

नगर निगम के सभी जोन तथा ग्रामीण आंचल में लगाए गए समाधान शिविर

22 शिकायतों में से 7 का हुआ समाधान : उपायुक्त विक्रम सिंह

समाचार गेट/संजय शर्मा

फरीदाबाद। प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार तथा जिला उपायुक्त विक्रम सिंह के मार्गदर्शन में नगर निगम के तीनों जोन के कार्यालयों तथा ग्रामीण आँचल में तीनों ब्लॉकों के बीडीपीओ कार्यालयों में सोमवार को समाधान शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 22 शिकायतें आई, जिनमें से 07 शिकायतों का संबंधित अधिकारियों द्वारा मौके पर ही समाधान करवा दिया गया। शेष शिकायतों का निवारण भी अति शीघ्र करने के कड़े निर्देश दे दिए गए हैं।

उपायुक्त विक्रम सिंह ने बताया मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार प्रॉपर्टी आईडी से संबंधित शिकायतों के समाधान के लिए प्रत्येक कार्य दिवस के दौरान सुबह 9 से 11 बजे तक नगर निकाय कार्यालयों में समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों में कोई भी आमजन अपनी शिकायत लेकर पहुंच सकता है और उसका समाधान करवा सकता है। समाधान शिविर में प्रॉपर्टी आईडी, पानी/सीवरेज, सड़कें व सफाई संबंधित शिकायत प्राप्त हुई, जिसके लिए वहां संबंधित अधिकारीगणों को निर्देश दिए गए कि वे उक्त शिकायतों का निपटान शीघ्र अति शीघ्र करें। वहीं समाधान शिविर में आए प्रार्थियों की शिकायतों को जिन्हें लिखने में परेशानी हो रही थी उनकी शिकायतों को नगर निगम के कर्मचारियों की सहायता से लिखवा कर व पूरे दस्तावेज लगाकर समाधान भी मौके पर करवाया गया।

उपायुक्त विक्रम सिंह ने सभी संबंधित अधिकारियों को प्रतिदिन लगने वाले समाधान शिविरों में निर्देश दिए है कि वे जनता की शिकायतों को शांति पूर्वक सुने और सभी शिकायतकर्ताओं विशेषतौर पर वरिष्ठ नागरिकों, विकलांगों तथा महिलाओं का सम्मान करते हुए उनकी शिकायतों का निवारण करें।

शिव महापुराण के पहले दिन उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, पं. प्रदीप मिश्रा की कथा सुनने पहुंचे

जगत का कल्याण करने वाली है शिव महापुराण की कथा : पंडित प्रदीप मिश्रा

समाचार गेट/ब्यूरो

फरीदाबाद। कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा कि पुण्य प्रबल होता है तो शिव महापुराण की कथा होती है। बीज भूमि में डालने पर अंकुरित होगा, यह सत्य है। संत का काम परमात्मा के मंदिर तक पहुंचाना है। दुख में कर्म ही साथ देता है। विपरीत परिस्थितियों में कर्म ही साथ देता है। शिव को एक लोटा जल चढ़ा रहे हो तो कल्याण अवश्य होगा। जहां शिव महापुराण की कथा होती है वहां शिव का कैलाश व पृथ्वी के द्वादश ज्योतिर्लिंग आ जाते हैं। उन्होंने कहा कि शिव महापुराण की कथा में पद, प्रतिष्ठा, कुर्सी को घर छोडक़र आए।

कथा में पद का अभिमान नहीं होना चाहिए। पंडाल में जहां स्थल मिले, वहीं बैठ जाना चाहिए। विशिष्टता नहीं दिखानी चाहिए। उन्होंने शिव महापुराण की कथा में पहुंचे श्रद्धालुओं को माथे तिलक और विल्व पत्र की महत्ता को बताया। वे सोमवार को उद्योगपति प्रवीण पाराशर एवं हेमलता पाराशर द्वारा आयोजित फरीदाबाद आईएमटी स्थित सेक्टर-66 में शिवमहापुराण की कथा करने पहुंचे हैं। यह कथा 5 दिनों तक चलेगी। जिसमें आज पहला दिन रहा।

लाखों शिव भक्तों ने लिया कथा का आनन्द :

कथा में पहले ही दिन दूर-दराज लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ जुट गई। भारी भीड़ को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद कर दी गई है। वहीं महिलाओं की सुरक्षा के लिए विशेष प्रबंध किए गएज तथा सभी को किसी प्रकार की महंगे आभूषण व जरुरत से अधिक पैसे की मनाही मंच से की गई।

सुरक्षा का भारी इंतजाम :

भारी भीड़ के बीच किसी तरह की अव्यवस्था न हो इसके लिए भारी मात्रा में पुलिस की तैनाती के अलावा निजी सुरक्षा एजेंसियों की मदद ली गई। व्यवस्था बनाएं रखने के लिए फरीदाबाद के आसपास जिलों से भी पुलिस को बुलाया गया है। इसके अलावा किसी भी मेडिकल इमर्रेजी में से निपटने के लिए नर्सिंग स्टॉफ और डॉक्टरों की टीम के साथ एंबुलेंस को तैनात किया गया है।

कथा स्थल में श्रद्धालुओं के लिए लगभग 15 एकड़ में वाटर प्रूफ पंडाल तैयार किया गया है। करीब 25 एकड़ में पार्किंग बनाई गई है। हरियाणा ही नहीं, बल्कि उत्तराखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, मध्यप्रदेश और यूपी से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए चिकित्सा, पीने के पानी, साउंड सिस्टम व एलईडी की व्यवस्था की गई है। इतना ही नहीं सौ से अधिक वॉशरूम बनाए गए हैं।

147 किलोग्राम पटाखे सहित चार आरोपी हुए गिरफ्तार

समाचार गेट/ब्यूरो

फरीदाबाद। अदालत के द्वारा अवैध पटाखों की बिक्री पर लगाई गई रोक के चलते पुलिस आयुक्त ओमप्रकाश नरवाल द्वारा अवैध पटाखें बेचने वालो के खिलाफ कार्रवाई के दिए गए दिशा-निर्देश के अंतर्गत कार्रवाई करते हुए थाना खेडी पुल की टीम ने पटाखों के साथ चार आरोपियो को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने सोमवार को बताया कि गिरफ्तार आरोपियों में विशाल, यश, विपिन और मोहित का नाम शामिल है।

विशाल और यश वाड मोहल्ला, विपिन बसेल्वा कॉलोनी और मोहित भुड कॉलोनी का रहने वाला है। आरोपियो को पुलिस टीम ने अपने गुप्त सूत्रों से प्राप्त सूचना से सेक्टर-86 एरिया से काबू किया है। आरोपियो से मौके पर 147.400 किलो ग्राम पटाखे बरामद हुए है। आरोपियो के खिलाफ थाना खेडीपुल में संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर गिरफ्तार किया है। आरोपियो से पूछताछ में सामने आया कि वे पटाखों को खेडी रोड गोदाम से 1लाख 68 हजार रुपए में खरीद कर लाये थे। आरोपी पटाखें बेचकर पैसे कमाना चाहते थे। आरोपियो को पूछताछ के बाद नियमानुसार कार्रवाई की गई।

वाहन चोरी के मामलों में 2 आरोपियो को अलग-अलग स्थान से किया गिरफ्तार

समाचार गेट/ब्यूरो

फरीदाबाद। पुलिस उपायुक्त अपराध हेमेंद्र कुमार मीणा के द्वारा शहर में अपराध पर अकुंश लगाने के लिए आरोपियो की धर-पकड़ के दिए गए दिशा-निर्देश के अंतर्गत अपराध शाखा NIT की टीम ने कार्रवाई करते हुए वाहन चोरी के मामलों में 2 आरोपियो को अलग-अलग स्थान से गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने बतलाया कि गिरफ्तार आरोपियो में अभिमन्यु उर्फ मन्नू और साहिल उर्फ ध्रुव का नाम शामिल है। दोनों आरोपी सेक्टर-4 के रहने वाला है। साहिल को सेक्टर-4 एरिया से गिरफ्तार है। आरोपी अभिमन्यु उर्फ मन्नू अपराध शाखा में पेश हुआ है। मोटर साइकिल सेक्टर-8 एरिया से चोरी की गई थी। आरोपियो ने मोटरसाइकिल प्रेमसागर को 5000/-रु में बेची थी। जिसको पहले गिरफ्तार किया जा चुका है। आरोपियों को पूछताछ के बाद अदालत में पेश कर जेल भेजा गया।

पटाखे चलाने को लेकर हुए झगड़े का दूसरा आरोपी गिरफ्तार

समाचार गेट/सुमित गोयल

फरीदाबाद। बल्लभगढ़ की सुभाष कॉलोनी में पटाखे चलाने को लेकर हुए झगड़े के मामले में पुलिस ने दूसरे आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है, जबकि अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी जारी है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार सुभाष कालोनी आदर्श नगर बल्लभगढ़ में गली में पटाखे चलाने को लेकर दो पड़ोसियों में विवाद हो गया था। पुलिस ने मामला दर्ज कर मुख्य आरोपी आशिफ को गिरफ्तार कर लिया था और अब एक और आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि सुभाष कॉलोनी पटाखा चलाने को लेकर हुए झगडे के मामले में पिंकी पुत्री दुर्गा प्रसाद वासी सुभाष कॉलोनी आदर्श नगर बल्लबगढ़ की शिकायत थाना आदर्श नगर बल्लबगढ़ में अभियोग पंजीकृत किया गया था। थाना आदर्श नगर की टीम ने कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी आशिफ पुत्र कमरुद्दीन वासी टीकावास पलवल हाल हरी विहार सुभाष कॉलोनी आदर्श नगर को गिरफ्तार किया था। मामले में पुलिस टीम द्वारा लगातार आरोपियो की धर-पकड़ के लिए प्रयास किए जा रहे थे। जिसपर थाना आदर्श नगर पुलिस टीम के द्वारा आज आरोपी राशिद पुत्र कमरुद्दीन वासी टीकावास पलवल हाल हरी विहार सुभाष कॉलोनी आदर्श नगर को चंदावली पुल से गिरफ्तार किया है। आरोपी ने पूछताछ में बताया कि पटाखे चलाने को लेकर झगडा हुआ था। मामले में अन्य आरोपियो की तलाश जारी है, जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

संपादकीय

सामाजिक समरसता के लिए लगातार सक्रिय संघ

मौजूदा दौर में शासन की सबसे बेहतरीन व्यवस्था जिस संसदीय लोकतंत्र को माना गया है, उसकी एक कमजोरी है। वोट बैंक की बुनियाद पर ही उसका समूचा दर्शन टिका है, इसलिए समाज को बांटना और उसके जरिए भरपूर समर्थन जुटाना उसकी मजबूरी है। यही वजह है कि कभी वह जानबूझकर, तो कभी अनजाने में समाज को बांटने की कोशिश करती नजर आती है। राजनीति के इन संदर्भों पर जब गौर करते हैं तो उसके ठीक उलट वैचारिकी से आगे बढ़ता हुआ एक संगठन दिखता है। निश्चित तौर पर वह संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। शतकीय यात्रा की ओर बढ़ रहा संघ हिंदू समाज को एक रखने के ध्येय वाक्य से रंच मात्र भी पीछे नहीं हटा।

नरवीर यादव
कार्यकारी संपादक

लेकिन राजनीति को जब भी मौका मिलता है, वह संघ को अपने दायरे में खींचने और उसको सवालों के कठघरे में खड़ा करने की कोशिश करने लगती है। राजनीति को संघ को सवालों के घेरे में लाने का मौका हाल ही में मथुरा में दिए सर कार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले के बयान से मिला है। दत्तात्रेय होसबोले ने हिंदू समाज को एक रखने के संदर्भ में योगी आदित्यनाथ के बयान 'कटोगे तो बंटोगे' का समर्थन किया है। योगी आदित्यनाथ ने पहली बार यह विचार अगस्त महीने में लखनऊ में कल्याण सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में जाहिर किया था। उन दिनों बांग्लादेश में शेख हसीना सरकार का तख्तापलट की घटना ताजा थी। उसके बाद वहां के अल्पसंख्यकों यानी हिंदुओं पर चौतरफा हमले और अत्याचार जारी थे। उसका हवाला देते हुए आदित्यनाथ ने हिंदू समाज को इस नारे के जरिए एक रहने का संदेश दिया था। चूंकि भारतीय राजनीति का एक बड़ा हिस्सा अब भी सेकुलरवाद के चश्मे से ही दुनिया को देखता है, लिहाजा उसके निशाने पर आदित्यनाथ का यह बयान आना ही था। आदित्यनाथ का यह बयान राजनीति की दुनिया के उनके विरोधियों को घोर सांप्रदायिक लगना ही था। और जब इस बयान का दत्तात्रेय होसबोले का भी साथ मिल गया तो सांप्रदायिकता के छद्म विचार के आवरण में राजनीति करने वाली ताकतों को मौका मिलना स्वाभाविक है।

संघ को संकुचित अर्थों में हिंदुत्व का समर्थक बताया जाता रहा है। ऐसा करते वक्त सावरकर के उस विचार को भुला दिया जाता है, जो यह बताता है कि भारत वर्ष में जो भी जन्मा है, वह हिंदू है। तीन देशों की सीमाओं में बंट चुके भारत में मौलिक रूप से कोई गैर हिंदू है ही नहीं। पाकिस्तान के पत्रकार वसीम अल्ताफ का ट्वीट दीपावली के दिन एक्स पर चर्चा में रहा। जिसमें उन्होंने लिखा था कि काश उनके भी पूर्वज कुछ और तनकर खड़े रहते तो उन्हें भी होली और दीपावली जैसे उत्साह वाले त्योहार मनाने को मिलते। अपने इस ट्वीट के जरिए एक तरह से वे जाहिर कर रहे थे कि उनके पूर्वज भी हिंदू ही थे। संघ इसी विचार को मानता है, भारतीय यानी हिंदू। भारतीय समाज को कभी सांप्रदायिकता के आवरण में बांटा गया तो कभी जाति की संकीर्ण सोच के बहाने। संघ अपने जन्म से ही दोनों ही वैचारिकी का विरोध करता रहा है। इसके बावजूद उस पर कभी ब्राह्मणवादी होने तो कभी कुछ का आरोप लगता रहा है। किसी भी संगठन के किसी भी व्यक्ति के निजी तौर पर अपने विचार हो सकते हैं, उसकी सोच का असर उसके व्यक्तित्व पर पड़ सकता है। लेकिन वैचारिक रूप से संघ में ऊंच-नीच, भेदभाव की सोच नहीं रही है।

महात्मा गांधी ने भी संघ के 1934 के वर्धा के शिविर का दौरा किया था। संघ के उस शिविर में छूआछूत और ऊंचनीच का भाव न देखकर गांधी जी बहुत प्रभावित हुए थे। उन दिनों गांधी जी छूआछूत के खिलाफ अभियान चला रहे थे। उन्होंने तब माना था कि संघ के ऐसे प्रयास भारतीय समाज में बराबरी का भाव लाने में सफल हुए। राजनीति अक्सर महात्मा गांधी को लेकर संघ पर आरोप लगाती है कि वह महात्मा गांधी को नहीं मानता। संघ को सामाजिक रूप से बांटने को लेकर जब भी हमला किया जाता है, अक्सर गांधी विचार का ही सहारा लिया जाता है। हालांकि संघ ने कभी ऐसी कोई मंशा जाहिर नहीं की। उलटे गांधी संघ के समानता के विचारों से प्रभावित रहे। जिसकी तसदीक उनके द्वारा ही प्रकाशित हरिजन पत्रिका के 28 सितंबर 1947 के अंक में प्रकाशित एक रिपोर्ट करती है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, गांधी जी ने दिल्ली में सफाईकर्मियों की बस्ती में हुए संघ के एक कार्यक्रम में 16 सितंबर 1947 को हिस्सा लिया था। इस रिपोर्ट में लिखा है,गांधी जी ने कहा कि वे कई साल पहले वर्धा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिविर में गए थे, जब संस्थापक श्री हेडगेवार जीवित थे। स्वर्गीय श्री जमनालाल बजाज उन्हें शिविर में ले गए थे और वे (गांधी) उनके अनुशासन, अस्पृश्यता की पूर्ण अनुपस्थिति और कठोर सादगी से बहुत प्रभावित हुए थे।

यासीन-तय्यब दिवस के अवसर देश की महान शख्सियतों को ख़िराज ए अक़ीदत पेश की गई

कॉलेज के प्रांगण में बनीं मस्जिद में मरहूम चौधरी यासीन खान व मरहूम चौधरी तय्यब हुसैन के लिए की गईं दुआएं

कॉलेज में पानी भरा होने की वजह से कार्यक्रम आयोजित नहीं हुआ

हजारों साल नरगिस अपनी बे-नूरी पे रोती है, बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा!

समाचार गेट/अनिल मोहनियां

नूंह। सोमवार को 'यासीन-तय्यब दिवस' के अवसर पर नूंह के यासीन मेव डिग्री कॉलेज में बाबा-ए-कौम, कई बार विधायक व एम एल सी रहे मरहूम चौधरी मोहम्मद यासीन खाँ साहब व हिंदुस्तान की राजनीति के महारथी, देश की अज़ीम शख्सियत, तीन राज्यों में मंत्री रहे मरहूम चौधरी तय्यब हुसैन साहब को ख़िराज-ए-अकीदत पेश की गई। कॉलेज में बरसात का पानी भरा होने की वजह से हर वर्ष मनाए जाने वाला यासीन तय्यब दिवस को इस बार बड़े सादगी के साथ मनाया गया। किसी भी तरह का कार्यक्रम का आयोजन नहीं हुआ बल्कि उन्हें ईसाले सवाब के लिए यासीन मेव डिग्री कॉलेज में कुरान-खानी हुई तथा उनकी मजार पर दरूद-शरीफ पढ़ा गया। इस अवसर पर चौधरी तय्यब हुसैन के साहिबजादे चौधरी फ़ज़ल हुसैन, उनके सुपौत्र इनेलो नेता चौधरी ताहिर हुसैन एडवोकेट, चौधरी मौहम्मद तलहा एडवोकेट, चौधरी तारिक़ हुसैन आदि के अलावा कॉलेज के प्रिंसीपल डॉ. ऐजाज अहमद, हाजी फते मौहम्मद रिठोड़ा, शमसुद्दीन आदि के अलावा काफी संख्या में गणमान्य मौजूद रहे।

मरहूम चौधरी मोहम्मद यासीन खान व मरहूम चौधरी तय्यब हुसैन हिंदुस्तान की महान शख्सियतों में से एक हैं। उनकी हरियाणा ही नहीं बल्कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, चंडीगढ़ और देश के कई राज्यों में अपनी अलग ही पहचान थी। मरहूम चौधरी तय्यब हुसैन तीन राज्यों में मंत्री होने के साथ साथ गुड़गांव लोकसभा व फरीदाबाद लोकसभा से दो बार सांसद भी रहे थे। आज उनकी विरासत को उनके बड़े बेटे चौधरी ज़ाकिर हुसैन पूर्व विधायक, चौधरी फजल हुसैन, चौधरी ताहिर हुसैन के अलावा उनकी बेटी जाहिद खान बखूबी संभाल रही हैं।

जिला में अब तक 21486 मीट्रिक टन बाजरा व 12264 एमटी धान की हुई खरीद : उपायुक्त

समाचार गेट/अनिल मोहनियां

नूंह। उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने बताया कि जिला की अनाज मंडियों में अब तक 12264 मीट्रिक टन धान और 21486 मीट्रिक टन बाजरे की खरीद की गई है। नूंह, तावडू, फिरोजपुर-झिरका, पुन्हाना, पिनगवां की अनाज मंडियों में समर्थन मूल्य पर बाजरा व धान की खरीद निरंतर जारी है। उन्होंने बताया कि अब तक हैफेड की ओर से तावडू अनाज मंडी में 9094 एमटी, फिरोजपुर-झिरका अनाज मंडी में 5849 मीट्रिक टन बाजरा खरीदा जा चुका है, जबकि हरियाणा वेयर हाउसिंग कॉर्पोरेशन की ओर से नूंह मंडी में 1101 तथा पुन्हाना मंडी में 4413 एमटी बाजरा व पिनगवां मंडी में 1029 एमटी बाजरे की खरीद की जा चुकी है और 20181 टन बाजरे का उठान हो चुका है।

इसी प्रकार जिला में किसानों से 12264 मीट्रिक टन धान की खरीद भी की जा चुकी है। इसमें से 12264 एमटी धान का उठान भी हो चुका है। प्राईवेट डिलरों द्वारा नूंह में 7499 एमटी, पुन्हाना की अनाज मंडी में 4765 एमटी धान की खरीद की जा चुकी है। उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने जिला के किसानों से आह्वान किया है कि वे धान की फसल की कटाई के उपरांत फसल अवशेषों को आग न लगाएं। फसल अवशेषों को जलाने से पर्यावरण प्रदूषित होता है तथा पशुओं के लिए चारे की कमी होती है। बल्कि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करें। फसल अवशेषों से पशुओं के लिए चारा भी बनाया जा सकता है तथा किसान कृषि यंत्रों की मदद से फसल अवशेषों की गांठ बनाकर उसकी बिक्री कर अतिरिक्त आय भी कमा सकते हैं। फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर भूमि की उपजाऊ शक्ति को भी बढ़ाया जा सकता है।

समाधान शिविर में नागरिकों की समस्याओं का हो रहा मौके पर निदान : डीसी

समाधान शिविर में 4 शिकायतें दर्ज, जिनमें से 3 शिकायतों का मौके पर किया समाधान

समाचार गेट/अनिल मोहनियां

नूंह। उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने कहा कि जिला स्तर पर स्थानीय निकाय व ग्रामीण विकास विभाग द्वारा समाधान शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। नगर परिषद नूंह, नगर पालिका पुन्हाना, फिरोजपुर-झिरका व तावडू के अलावा ग्रामीण स्तर पर सातों ब्लॉक में समाधान शिविर आयोजित हो रहे हैं। नागरिकों की समस्याओं का शिविरों में मौके पर ही समाधान किया जा रहा है।

सोमवार को आयोजित हुए समाधान शिविरों में 4 शिकायतें दर्ज हुई जिनमें से 3 शिकायतों का मौके पर ही समाधान किया गया। नगर परिषद नूंह व नगरपालिका कार्यालय में शिकायतें सुनी गई। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक शिकायत पर पूरा फोकस किया जा रहा है व तत्परता के साथ समाधान किया जा रहा है। वहीं, ग्रामीण विकास विभाग द्वारा बीडीपीओ स्तर पर समाधान शिविर आयोजित किए गए हैं जिनमें नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान किया गया।

उपायुक्त धीरेंद्र खड़गटा ने कहा कि समाधान शिविरों के आयोजन से नागरिकों व प्रशासन के बीच रिश्ता बेहतर हुआ है। नागरिकों को दैनिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के प्रभावी समाधान का एक बेहतर मंच मिला है। उन्होंने कहा कि नागरिक समाधान शिविर में अपनी शिकायतें लेकर पहुंच रहे हैं। डीसी ने सभी जिला वासियों से आह्वान करते हुए कहा कि समाधान शिविर के माध्यम से वह अपनी समस्याओं का समाधान करवा सकते हैं।

जिला युवा महोत्सव 18 नवंबर को

समाचार गेट/अनिल मोहनियां

नूंह। युवा मामले एवं कौशल विभाग हरियाणा तथा नेहरू युवा केंद्र के सौजन्य से जिला युवा महोत्सव 18 नवंबर को मनाया जाएगा। यह जानकारी देते हुए जिला युवा समन्वय अधिकारी सुधीर कुमार ने बताया कि इसमें 15 से 29 आयु वर्ग का कोई भी युवा भाग ले सकता है। इसके लिए युवा अपना आवेदन अपनी नजदीकी आई.टी.आई. में 5 नवंबर तक कर सकते हैं। आवेदक रजिस्ट्रेशन फॉर्म http://bit.ly/xUCfRXJ लिंक से डाउनलोड कर सकते हैं। आवेदन के लिए प्रतिभागी को रजिस्ट्रेशन फॉर्म के साथ दसवीं की मार्कशीट, आधार कार्ड, फैमिली आईडी, फोटो व बैंक खाता की प्रति लगाना अनिवार्य हैं। जिला स्तरीय युवा महोत्सव में लोक गीत ग्रुप, लोक गीत एकल, ग्रुप लोक नृत्य हरियाणवी व एकल, पोस्टर मेकिंग, कहानी लेखन, कविता पाठ, भाषण प्रतियोगिता, फोटोग्राफी, साइंस प्रोजेक्ट व मॉडल आदि शामिल हैं। प्रथम आने वाले प्रतिभागी को 2100 रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। द्वितीय को 1500 व तृतीय को 1100 रुपये व प्रमाण पत्र दिया जाएगा। प्रथम आने वाले प्रतिभागी राज्य स्तरीय युवा महोत्सव में भाग लेंगे। इच्छुक आवेदक अपना आवेदन 5 नवंबर तक अपनी नजदीकी राजकीय आई०टी०आई० नूंह में व्यक्तिगत रूप से जमा करवा सकते हैं और अधिक जानकारी के लिए संस्थान में संपर्क कर सकते हैं।

बेरोजगारी भत्ता के लिए आवेदन किए गए आमंत्रित : जिला रोजगार अधिकारी

समाचार गेट/अनिल मोहनियां

नूंह। जिला रोजगार अधिकारी श्याम सुंदर रावत ने बताया कि रोजगार विभाग हरियाणा द्वारा 1 नवम्बर 2024 से बेरोजगारी भत्ता हेतु आवेदन प्रक्रिया प्रारंभ की गई है, जिसके तहत 21 से 35 वर्ष के सभी पात्र बेरोजगार युवा अब सरल पोर्टल की बजाए रोजगार विभाग की वेबसाइट www.hrex.gov.in पर ही पुराने बेरोजगारी भत्ता के लिए आवेदन कर सकते हैं। इस योजना के लिए आवेदन करने वाला प्रार्थी कम से कम तीन वर्ष से रोजगार विभाग में पंजीकृत होना चाहिए एवं प्रार्थी की शैक्षणिक योग्यता कम से कम 12 वीं उत्तीर्ण होनी चाहिए विस्तृत जानकारी के लिए प्रार्थी विभाग की वेबसाइट www.hrex.gov.in या जिला नूंह में अनाज मंडी स्थित रोजगार कार्यालय या अपने नजदीकी रोजगार कार्यालय से संपर्क कर सकता है। उन्होंने जिला नूंह के सभी बेरोजगार युवाओं से अपील की कि वे अधिक से अधिक संख्या में बेरोजगारी भत्ता योजना का लाभ उठाएं। उन्होंने बताया कि आनलाइन आवेदन करने की अंतिम तिथि 30 नवंबर तक रहेगी।

लोकसभा सत्र से पहले विधानसभा सत्र बुलाने की तयारी में जुटी नायब सरकार

राज्यपाल को पत्र भेज विधानसभा सत्र बुलाने की मांग

लेखक/राजनीतिक विश्लेषक/ वरिष्ठ पत्रकार
डॉ. पं0.मोहन तिवारी

समाचार गेट/मोहन तिवारी

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने सोमवार को पंचकुला में पुस्तक मेले का उद्घाटन के दौरान मीडिया से वार्तालाप के दौरान कहा की विधानसभा के एक दिवसीय सत्र में विधायको का शपथ ग्रहण और विधानसभा अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव हो चुका है। उन्होंने कहा की अब सही तरीके से विधानसभा सत्र बुलाया जाएगा, जिसमे सभी विधायकों को अपने अपने क्षेत्र की मुद्दो को रखने का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा की हालांकि अभी तक कोई तिथि निर्धारित नही हुई है,लेकिन कोशिश किया जा रहा है की लोकाबाहा सत्र से पहले विधानसभा सत्र बुलाया जा सके। जिसके बाद यह अनुमान लगाया जा रहा है की हरियाणा विधानसभा का शीतकालीन सत्र बहुत जल्द आयोजित किया जा सकता है इसके लिए मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने राज्यपाल को पत्र भी भेज दिए है। विदित है की हरियाणा में नगर निगम का चुनाव भी होने है जिसकी जिम्मेदारी अभी रिक्त होने के चलते हरियाणा सरकार के अधिकारी देख रहे है। उम्मीद किया जा रहा है की इस साल के आखिरी में नगर निगम के चुनाव का ऐलान भी चुनाव आयोग कर सकता है हालांकि इस बात की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं किया गया है,लेकिन कयास लगाए जा रहे है की जल्द ही सरकार नगर निगम के चुनाव भी करा सकती है जिसको लेकर दावेदार अभी से ही बड़े नेताओं के चक्कर काटने शुरू कर दिए है। जल्दी सत्र बुलाए जाने से अच्छी बात यह है की सभी विधायक अपने -अपने क्षेत्र के मुद्दो की बात कर सकेंगे।

लेखक के निजी विचार हैं।

लेखक/राजनीतिक रणनीतिकार/राजनीतिक विश्लेषक व वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भागवत कथा सुनने मात्र से मानव प्राप्त हो जाता है मोक्ष: कृष्ण किशोर दास

समाचार गेट/सुनील दीक्षित

कनीना। भागवत कथा सुनने के बाद मानव मोक्ष को प्राप्त हो जाता है। उक्त विचार कथावाचक भागवत आचार्य कृष्ण किशोर दास ने गांव धन्नौदा में आयोजित सात दिवसीय भागवत कथा के शुभारंभ करने के उपरांत भक्तगणों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। कथावाचक भागवत आचार्य कृष्ण किशोर दास ने कहा कि भागवत कथा में वह सारा ज्ञान समाया हुआ है, जिसको सुनने के उपरांत कुछ और ज्ञान करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। उन्होंने कहा कि भागवत कथा के बताएं रास्ते पर चलकर मानव बुरे कर्मों से छूट जाता है तथा मोक्ष के धाम को चला जाता है। इसलिए हमें भागवत कथा अवश्य ही सुनाई चाहिए। उन्होंने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रम कराने वालों को खुद को तो पुण्य लगता ही है तथा कथा सुनने वाले प्रेमियों को भी इसका लाभ मिलता है। भागवत कथा वह ज्ञान है जो सुनने मात्र से ही मानव भवसागर से पार हो जाता है।

सफाई कर्मचारियों ने जताया आरती राव का आभार

समाचार गेट/सुनील दीक्षित

कनीना। ग्रामीण सफाई कर्मचारियों ने 5 माह का बकाया वेतन मिलने पर मंत्री आरती राव आभार व्यक्त किया है। उन्होंने बताया कि 5 माह से वेतन नहीं मिलने के कारण ग्रामीण चौकीदारों को काफी परेशानी उठानी पड़ रहीं थी। कई बार धरना-प्रदर्शन व मांग पत्र सौंपने के बाद भी उनकी मांग की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा था। चुनाव के दौरान ग्रामीण चौकीदारों की तरफ से आरती राव के समक्ष अपनी मांग रखी गई थी। मंत्री आरती राव ने जल्द बकाया वेतन दिलाने का आश्वासन दिया था। इस अवसर पर विजयपाल, शिवकुमार, राकेश, संजय, सोमदत्त, अशोक, अनूप, पवन, पिंकू, गीता, बबली, मोनू, सोनू ने स्वास्थ्य मंत्री आरती का आभार जताया है।

रसूलपुर में रक्तदान शिविर 10 को

समाचार गेट/सुनील दीक्षित

कनीना। कनीना खंड के गांव रसूलपुर में आगामी 10 नवंबर को आर्य समाज द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। जानकारी देते हुए सतीश आर्य ने बताया कि हवन यज्ञ के साथ रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया जाएगा। इसके लिए सभी आवश्यक तैयारियां की जा रही है। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा युवाओं से रक्तदान शिविर में भाग लेने की अपील की है।

नशे के विरुद्ध जागरूकता अभियान शिक्षकों को किया जागरूक

समाचार गेट/ब्यूरो

अम्बाला। हरियाणा राज्य नारकोटिक्स कण्ट्रोल ब्यूरो पुलिस महानिदेशक श्री ओपी सिंह, भापुसे साहब के दिशानिर्देशों एवं मार्गदर्शन और पुलिस अधीक्षक श्रीमती पंखुरी कुमार साहब के नेतृत्व में हरियाणा को नशे से मुक्त करने के लिए ब्यूरो द्वारा निरंतर कार्रवाई की जा रही है। ब्यूरो के जागरूकता कार्यक्रम एवं पुनर्वास प्रभारी/ उप निरीक्षक हॉ अशोक कुमार वर्मा प्रतिदिन साइकिल के साधन का प्रयोग करते हुए सड़कों पर लोगों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करते हुए मिल रहे हैं। नशा मुक्त हरियाणा अभियान के अंतर्गत वे सन्देश देते हुए कह रहे हैं कि नशे की लत मौत का खत। नशा छोड़ो आगे बढ़ो। वे साइकिल पर सवार होकर गाँव गाँव लोगों को जागरूक कर रहे हैं। उनकी साईकिल के आगे नशा मुक्त अभियान से जुड़ी पट्टी पर लिखा है- नशे को कहें न और जीवन को कहें हाँ। नशा होता अच्छा तो माँ कहती खा ले मेरे बच्चा। ब्यूरो का हेल्पलाइन नंबर 9050891508 विशेष रूप से लिखा है। वे आज अंबाला में पहुंचे हुए थे और नशे के विरुद्ध एक दिवसीय 77वां जागरूकता कार्यक्रम किया। उन्होंने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अम्बाला छावनी में प्राचार्य और शिक्षकों के साथ वार्तालाप करते हुए बताया कि किस प्रकार आज बच्चों पर ध्यान रखना है। डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने कहा कि समय समय पर बच्चों के शयनकक्ष का निरिक्षण करना चाहिए और कोई भी संदिग्ध वस्तु मिलने पर इसकी जानकारी प्राप्त करें और बहुत ही प्रेम से इस समस्या का निपटारा करना है। डॉ. अशोक कुमार वर्मा ने बताया कि नशा तस्करी में सॉलिप्त अपराधियों की धरपकड़ के साथ साथ जागरूकता अत्यावश्यक है ताकि नए लोग इस नशे का शिकार न हों। उन्होंने कहा कि यद्यपि ब्यूरो द्वारा प्रत्येक शिक्षण संस्थान में जाकर नशे के विरुद्ध जागरूकता कार्यक्रम किया जा रहा है तो भी उनसे 9050891508 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

'राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

समाचार गेट

को TITLE CODE : HARHIN11569

आवश्यकता है

♦ हरियाणा के प्रत्येक जिले में ब्यूरो चीफ
♦ उपमंडल व ब्लॉक स्तर पर संवाददाता
♦ ग्रामीण संवाददाता ♦ फोटोग्राफर
♦ विज्ञापन प्रतिनिधि

इच्छुक युवक-युवती अपना बायोडेटा मेल करें-
samachargate@gmail.com
Cont.: 9818180269

कर्म कीजिए भाग्य आपका गुलाम बन जाएगा

बहुत से लोग इस बात का रोना रोते रहते हैं कि उनका भाग्य ही खराब है। नसीब नहीं साथ दे रहा है इसलिए किसी काम में सफलता नहीं मिलती है। जबकि सच यह है कि भाग्य तो कर्म के अधीन है। हाथ की लकीरों में अपने भाग्य को ढूंढने की बजाय अगर हम हाथों को कर्म करने के लिए प्रेरित करें तो भाग्य रेखा खुद ही मजबूत हो जाएगी और हम वह पा सकेंगे जिसकी हम चाहत रखते हैं।

कर्म के अनुसार बदलती हैं रेखा

हस्त रेखा विज्ञान के अनुसार कुछ रेखाओं को छोड़ दें तो बाकी सभी रेखाएं कर्म के अनुसार बदलती रहती है। अपनी हथेली को गौर से देखिए कुछ समय बाद रेखाओं में कुछ न कुछ बदलाव जरूर दिखेगा इसलिए कहा गया है कि रेखाओं से किस्मत नहीं कर्म से रेखाएं बदलती हैं।

सकल पदारथ एहि जग माहि

गोस्वामी तुलसीदास जी कर्म के मर्म को बखूबी जानते थे तभी उन्होंने कहा है सकल पदारथ एहि जग माहि। कर्महीन नर पावत नाहि।। तुलसीदास जी ने अपनी दोहा में स्पष्ट किया है कि इस संसार में सभी कुछ है जिसे हम पाना चाहें तो प्राप्त कर सकते हैं लेकिन जो कर्महीन अर्थात प्रयास नहीं करते इच्छित चीजों को पाने से वंचित रह जाते हैं।

सिंह को भी आलस्य त्यागना होगा

नीतिशास्त्र में कहा गया है कि न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥ इसका तात्पर्य यह है कि सिंह अगर शिकार करने न जाए और सोया रहे तो मृग स्वयं ही उसके मुख में नहीं चला जाएगा। यानी सिंह को अपनी भूख मिटानी है तो उसे आलस त्यागकर मृग का शिकार करना ही पड़ेगा। इसी प्रकार हम सभी को जिस चीज की, जिस मंजिल की तलाश है उसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। प्रयास का फल देर से मिल सकता है लेकिन परिणाम आपके पक्ष में होगा यह मानकर सही दिशा में प्रयास करते रहना चाहिए।

पृथ्वी यानी कर्म की भूमि

शास्त्रों में पृथ्वी को कर्म भूमि कहा गया है। यहां आप जैसे कर्म करते हैं उसी के अनुरूप आपको फल मिलता है। भगवान श्री कृष्ण ने ही गीता में कर्म को ही प्रधान बताया है और कहा है कि हम मनुष्य के हाथों में मात्र कर्म है अत: हमें यही करना चाहिए। फल क्या होगा वह हमें भगवान पर छोड़ देना चाहिए। भगवान अपने भक्तों को कभी निराश नहीं करते हैं इसलिए जो जैसा कर्म करता है उसे उसका उसे वैसा ही फल देते हैं। सीधी बात यह है कि कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहिं सो तस फल चाखा। अर्थात जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है।

जैसा सोचेंगे वैसा ही परिणाम मिलेगा आपको

अगर आप दु:खी हैं तो इसका जिम्मेदार कोई और नहीं है बल्कि आप खुद हैं। इसी प्रकार अगर आप सुखी है तो यह भी आपको अपने ही कारण प्राप्त हुआ है। ईश्वर का आपके सुख-दु:ख से कोई लेना देना नहीं है। ईश्वर तो मात्र कर्म का फल प्रदान करने वाला है। यूं समझ लीजिए कि ईश्वर कमल का पुष्प है। कमल पुष्प जैसे कीचड़ में रहकर भी कीचड़ के गुण दोष से प्रभावित नहीं होता, उसी प्रकार ईश्वर सब में और सब के बीच में रहकर भी किस से न तो मित्रता करता है और न शत्रुता। आप जैसा करेंगे और जैसा चाहेंगे वैसे ही आपके आस-पास का वातावरण तैयार कर देगा।

हस्तरेखा विज्ञान भी भविष्य को जानने का एक माध्यम है। लेकिन अगर आप अपने हाथों को गौर से देखें तो पाएंगे कि समय-समय पर हाथों की रेखाओं में परिर्वतन हो रहा है। यह परिर्वतन आपके कर्म और व्यवहार के अनुरूप होता है। इसलिए अगर आप सोचते है कि एक बार जो किस्मत में लिखकर आ गया है ऐसा होना तय है तो मन से इस धारणा को निकाल दीजिए। अगर ऐसा होता है तो ज्योतिषशास्त्र से सिर्फ भविष्य देखा जा सकता था। लेकिन ज्योतिषशास्त्र में भविष्य देखने के साथ ही साथ उपाय भी बताये जाते हैं ताकि घटना में बदलाव किया जा सके।

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कहा है कि उद्धारेदात्मनात्मानं नात्मानवसादयेत। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।। अर्थात मनुष्य स्वयं ही अपना शत्रु और मित्र है। मनुष्य को चाहिए कि वह स्वयं को पतन से बचाये और संसार रूपी समुद्र से उद्धार के लिए प्रयास करे। जो मनुष्य स्वयं का मित्र होता है वह सकरात्मक सोच रखता है और ईश्वर ने जो भी साधन प्रदान किये हैं उसी से संतुष्ट होकर उन्नति के लिए प्रयास करता है। इसके विपरीत जो लोग साधन हीनता का रोना रोते रहते हैं और उन्नति के प्रयास नहीं करते हैं वह स्वयं ही अपने शत्रु हैं। वेद में कहा गया है कि उद्यानं ते पुरूष नावयनम्। यानी हे पुरूष! तुझे ऊपर उठना है न कि नीचे गिरना। इसलिए मनुष्य को हमेशा उन्नति के लिए ऊपर उठने के लिए प्रयास करना चाहिए। नकारात्मक सोच रखने से मन दु:खी होता है और क्रोध बढ़ता है। वाणी में प्रेम और मधुरता नहीं रह जाती है। अनायास ही कोई गलत कार्य कर बैठते हैं। इसलिए सोच बदलिए और उन्नति के लिए प्रयास कीजिए। जैसा आप सोचेंगे वैसा हो जाएगा।

अहंकार त्यागने वाले ही महापुरूष होते हैं

बहुत से लोग दिन-रात प्रयास करते हैं कि उन्हें किसी तरह उच्च पद मिल जाए। खूब सारा पैसा हो और आराम की जिन्दगी जियें। जब ये सब प्राप्त हो जाता है तो इसे ईश्वर की कृपा मानने की बजाय अपनी काबिलियत और धन पर इतराने लगते हैं। जबकि संसार में किसी चीज की कमी नही है। अगर आप धन का अभिमान करते हैं तो देखिए आपसे धनवान भी कोई अन्य है। विद्या का अभिमान है तो ढूंढकर देखिए आपसे भी विद्वान मिल जाएगा। इसलिए किसी चीज का अहंकार नहीं करना चाहिए। जो लोग अहंकार त्याग देते हैं वही महापुरूष कहलाते हैं।

महाभारत में कथा है कि दुर्योधन के उत्तम भोजन के आग्रह को ठुकरा कर भगवान श्री कृष्ण ने महात्मा विदुर के घर साग खाया। भगवान श्री कृष्ण के पास भला किस चीज की कमी थी। अगर उनमें अहंकार होता तो विदुर के घर साग खाने की बजाय दुर्योधन के महल में उत्तम भोजन ग्रहण करते लेकिन श्री कृष्ण ने ऐसा नहीं किया। भगवान श्री राम ने शबरी के जूठे बेर खाये जबकि लक्ष्मण जी ने जूठे बेर फेंक दिये। यहीं पर राम भगवान की उपाधि प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि उनमें भक्त के प्रति अगाध प्रेम है, वह भक्त की भावना को समझते हैं और उसी से तृप्त हो जाते हैं।

अहंकार उन्हें नहीं छूता है, वह ऊंच-नीच, जूठा भोजन एवं छप्पन भोग में कोई भेद नहीं करते। शास्त्रों में भगवान का यही स्वभाव और गुण बताया गया है। महात्मा बुद्ध से संबंधित एक कथा है कि एक बार महात्मा बुद्ध किसी गांव में प्रवचन दे रहे थे। एक कृषक को उपदेश सुनने की बड़ी इच्छा हुई लेकिन उसी दिन उसका बैल खो गया था। इसलिए वह महात्मा बुद्ध के चरण छू कर सभा से वापस बैल ढूंढने चला गया। शाम होने पर कृषक बैल ढूंढकर वापस लौटा तो देखा कि बुद्ध अब भी सभा को संबोधित कर रहे हैं।

भूखा प्यासा किसान फिर से बुद्ध के चरण छूकर प्रवचन सुनने बैठ गया। बुद्ध ने किसान की हालत देखी तो उसे भोजन कराया, फिर उपदेश देना शुरू किया। बुद्ध का यह व्यवहार बताता है कि महात्मा बुद्ध अहंकार पर विजय प्राप्त कर चुके थे। बुद्ध के अंदर अहंकार होता तो किसान पर नाराज होते क्योंकि बैल को ढूंढने के लिए किसान ने बुद्ध के प्रवचन को छोड़ दिया था। शास्त्रों में अहंकार को नाश का कारण बताया गया है इसलिए मनुष्य को कभी भी किसी चीज का अहंकार नहीं करना चाहिए।

दूसरों के अवगुण नहीं गुण भी देखिए

मनुष्यों की सामान्य प्रवृति है कि वह अपने भीतर सिर्फ गुण देखता है और दूसरों के गुणों को पहचान नहीं पाता है। यही कारण है कि मनुष्य खुद को दूसरों से श्रेष्ठ मानने की भूल कर बैठता है। जबकि गौर से देखें तो जिसे आप अयोग्य व्यक्ति मानते हैं उसमें भी कुछ न कुछ गुण अवश्य पाएंगे। अगर उन गुणों को अपने अंदर ग्रहण करने की कोशिश करें तो जिस व्यक्ति को अयोग्य मान रहे थे वह भी आपको गुणों का खजाना नज़र आने लगेगा। इससे आप कई चीजें एक साथ प्राप्त कर लेंगे। एक तो उस व्यक्ति की नज़र में आपका सम्मान बढ़ेगा। मन से निरादर की भावना दूर होगी और आपसी प्रेम में वृद्धि होगी। महात्मा गांधी के जीवन से जुड़ी एक ऐसी ही घटना का जिक्र यहां प्रस्तुत है जो बताता है कि किस प्रकार हमें बुराईयों में से अच्छाई को ग्रहण करना चाहिए। महात्मा गांधी इंग्लैंड की यात्रा पर थे। उस समय उन्हें एक अंग्रेज ने एक कागज पर बुरा-भला लिखकर दिया। गांधी जी ने उस व्यक्ति से कुछ नहीं कहा बल्कि कागज में लगा हुआ पिन निकालकर अपने पास रख लिया और कागज फेंक दिया। गांधी जी के साथ जो लोग थे उन्होंने गांधी जी से कहा कि अंग्रेज आपको बुरा-भला कह रहा है और आप उसे कुछ जवाब नहीं दे रहे हैं। गांधी जी ने कहा कि कागज पर लिखे हुए शब्द मेरे लिए उपयोगी नहीं थे। इसलिए मैंने उन्हें फेंक दिया। जबकि कागज में लगा हुआ पिन उपयोगी है इसलिए मैंने उसे अपने पास रख लिया है। गांधी जी ने ऐसा कह कर यह संदेश दिया कि बुराईयों को छोड़ दो और जहां कहीं कुछ भी अच्छाई दिखे उसे तुरंत ग्रहण कर लो।

वायु सेना का विमान दुर्घटनाग्रस्त, पायलट और को-पायलट ने कूदकर बचाई जान

आगरा । यूपी के आगरा में सोमवार को वायु सेना का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें पायलट और को-पायलट ने कूदकर जान बचाई। फिलहाल इस घटना को लेकर वायु सेना की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। बताया जा रहा है कि हादसे के बाद पायलट और उसके साथी दो किलोमीटर दूर मिले हैं। गनीमत रही कि पायलट ने सूझबूझ का परिचय देते हुए विमान को कागारौल के सोनिगा गांव के पास खाली खेतों में गिराया। यदि आबादी वाले हिस्से में विमान क्रैश होता तो बड़ी क्षति हो सकती थी। शुरुआती जानकारी के मुताबिक यह मिग-29 विमान था, जो पंजाब के आदमपुर से उड़ा था। फिलहाल घटनास्थल पर ग्रामीणों की भारी भीड़ है। मौके पर पुलिस बल भी पहुंच गया है।

ईरानी पर्यटक ने मंदिर में नमाज पढ़ने पर मांगी माफी

-ताजमहल देखने आया है ईरानी परिवार

आगरा । आगरा में ताजमहल घूमने आए एक ईरानी ने मंदिर में जाकर नमाज पढ़ी। यह मामला सामने आने और पकड़े जाने के बाद ईरानी परिवार ने माफी भी मांग ली है। ईरानी परिवार ने कहा कि मंदिर में साफ-सफाई देखकर नमाज पढ़ ली थी। बता दें कि ताजमहल के पूर्वी गेट के पास एक मंदिर बना हुआ है। मंदिर के अंदर एक ईरानी पर्यटक ने नमाज पढ़ ली। जिसके बाद वहां हंगामा हो गया था। सूचना पर ताज सुरक्षा पुलिस मौके पर पहुंचकर जांच की तो ईरानी पर्यटक ने बताया कि उन्हें नहीं पता था कि यह मंदिर है। साफ-सफाई देखी तो उन्होंने नमाज पढ़ ली। ईरानी परिवार ने इसे लेकर माफी भी मांग ली है। मामला सोमवार का बताया जा रहा है। इस दौरान पुलिस ने पर्यटकों से बातचीत की और उनका पासपोर्ट चेक किया। पूछताछ में ईरानी परिवार ने बताया कि ताजमहल देखने के बाद बाहर आये तो काफी भीड़ जमा थी। ईरानी परिवार ने कहा कि मंदिर का दरवाजा खुला हुआ था और मंदिर में कोई भी नहीं था। बाद में पता लगा कि यह मंदिर है। पिता और बेटी ने माफी मांगी और कहा कि वह किसी की भी धार्मिक भावना को आहत नहीं करना चाहते हैं। ईरानी परिवार का माफी मागने का वीडियो भी वायरल हुआ है। एसीपी अरीब अहमद ने मौखिक तौर पर बताया कि ईरानी परिवार ताजमहल घूमने आया था। उन्होंने गलती से मंदिर में नमाज पढ़ ली थी। ईरानी परिवार ईरान में प्रोफेसर के पद पर है।

लॉरेंस के भाई ने दी भीम सेना अध्यक्ष को धमकी, सलमान से पहले तुझे मारुंगा

गुरुग्राम। एनसीपी नेता की हत्या करवाने और सलमान खान को धमकी देने वाले गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के भाई अनमोल बिश्नोई के खिलाफ सेक्टर-37 थाना पुलिस ने जान से मारने की धमकी देने का मामला दर्ज किया है। शिकायत भीम सेना के अध्यक्ष सतपाल तंवर ने दर्ज कराई है। तंवर का कहना है कि 30 अक्टूबर शाम छह बजकर 25 मिनट से लेकर रात नौ बजकर 37 मिनट पर उन्हें चार बार विदेशी नंबर से वाट्सएप कॉल आई। विदेशी नंबर होने की वजह से उन्होंने कॉल रिसीव नहीं की। रात नौ बजकर 48 मिनट पर जब फिर कॉल आई, तो उन्होंने उठाया। कॉल उठाते ही कहा फिल्म अभिनेता सलमान खान उसका दुश्मन है और उसको मारने से पहले सतपाल तंवर को मारेगा। उसने कहा कि वह कनाडा से अनमोल बिश्नोई बोल रहा है। इसके बाद भी कई बार फोन करके धमकी दी। शिकायत के मुताबिक अप्रैल में भी उनके पास लॉरेंस बिश्नोई के नाम से धमकी भरा पत्र आया था। पुलिस प्रवक्ता का कहना है कि शुरुआती छानबीन से पता चलता है कि कॉल करने वाले की आवाज अनमोल बिश्नोई से मेल नहीं खा रही है। मामले की छानबीन क्राइम ब्रांच व साइबर क्राइम ब्रांच की टीम कर रही है।

गर्म लोहे से दागा, सिगरेट से जलाया, नाबालिग की हत्या कर टॉयलेट में फेंका

-लड़की घर में करती थी नौकरानी का काम, पुलिस ने किया दंपति को गिरफ्तार

चेन्नई। चेन्नई में एक नाबालिग लड़की का शव घर के टॉयलेट में मिलने से सनसनी फैल गई थी। वह नाबालिग लड़की घर में नौकरानी का काम करती थी जिसको प्रताड़ित करने और उसकी हत्या करने के मामले में पुलिस ने एक दंपती को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इस मामले में चार अन्य लोगों को भी हिरासत में लिया है। जांचकर्ताओं के मुताबिक नाबालिग लड़की को चेन्नई के अमिनजिकराई क्षेत्र के मेहता नगर स्थित एक फ्लैट में गंभीर यातनाएं दी गईं। उसे गर्म लोहे से दागने, सिगरेट से जलाने और अन्य क्रूरता का सामना करना पड़ा, जिसके कारण उसकी मौत हो गई। आरोपित दंपती निशाद और नासिया ने कथित तौर पर लड़की के शव को घर के टॉयलेट में छोड़ दिया और फरार हो गए। पुलिस ने मामले की जांच करते हुए दोनों को गिरफ्तार किया और अन्य चार लोगों को भी हिरासत में लिया है। यह घटना समाज में घरेलू कामकाजी लोगों के प्रति बढ़ते हिंसा और शोषण के मामलों को उजागर करती है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और पीड़िता को न्याय दिलाने ठोस कदम उठा रही है।

एआई में वृद्धि होने के कारण 2030 तक कई गुना बढ़ेगा ई कचरा

नई दिल्ली । भारत में जिस तरह से एआई मॉडल का तेजी से विकास हो रहा है। उसको देखते हुए रिपोर्ट में कहा गया है। 2030 तक 10 अरब आईफोन के बराबर ई कचरा भारत में एकत्रित होगा। यह कचरा भारत के लिए बड़ी समस्या खड़ा करेगा। कैंब्रिज यूनिवर्सिटी और चीन की वाइनीज एकैडमी आफ साइंसेज के शोधकर्ताओं ने नेचर जर्नल में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। उस रिपोर्ट में एआई सर्वर की वजह से जो ई कचरा बढ़ेगा। उसकी संभावनाओं पर काम किया गया है। शोधकर्ताओं के अनुसार 2023 तक 2.6 किलो टन प्रतिवर्ष ई कचरा था। जो 2030 तक लगभग 2.5 मिलियन टन प्रतिवर्ष हो जाएगा।

महिला सुरक्षा के मुद्दे पर बीजेपी ने सोरेन सरकार पर साधा निशाना

शिवराज सिंह चौहान ने कहा, झारखंड में बेटियां सुरक्षित नहीं

गांची (एजेंसी)। झारखंड चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने महिला सुरक्षा के मुद्दे पर सोरेन सरकार पर जमकर निशाना साधा है। केंद्रीय मंत्री और झारखंड में बीजेपी के चुनाव प्रभारी शिवराज सिंह चौहान ने महिला सुरक्षा के मुद्दे पर कहा कि राज्य की बेटियां सुरक्षित नहीं हैं। चौहान ने कहा कि सोरेन सरकार ने राज्य की महिलाओं और युवाओं के लिए कुछ भी नहीं किया है। इसलिए जनता इस सरकार को उखाड़ फेंकेगी। क्योंकि यह एक भ्रष्ट सरकार है। शिवराज सिंह ने कहा कि राज्य में हर दिन पेपर लीक के मामले सामने आ रहे हैं। वहीं भारतीय जनता पार्टी ने पेपर लीक करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का संकल्प लिया है। जिस दिन राज्य में भाजपा की सरकार बनेगी, यहां के युवाओं को रोजगार देने का काम किया जाएगा। झारखंड में महिलाओं के खिलाफ हिंसा, बलात्कार, हत्या और घरेलू हिंसा के मामलों में बढ़ोतरी हुई है। ऐसे में यह न सिर्फ महिलाओं के लिए असुरक्षित माहौल पैदा कर रहा है, बल्कि राज्य सरकार की सुरक्षा प्रणाली पर भी गंभीर सवाल खड़े कर रहा है। महिलाओं को लेकर सरकार के खिलाफ आक्रोश और असंतोष बढ़ता जा रहा है।

रोटी, बेटी और माटी की रक्षा करेगी बीजेपी

शिवराज ने कहा कि भाजपा रोटी, बेटी और माटी की रक्षा करेगी। चौहान ने आगे कहा कि राज्य में कांग्रेस और जेएमएम का गठबंधन चक्रवात दाना से भी अधिक खतरनाक है। बता दें कि राज्य में सोरेन की सरकार के लिए महिला सुरक्षा और रोजगार के मुद्दा एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। पिछले कुछ महीनों में राज्य में महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध और बढ़ती बेरोजगारी दरों ने राज्य सरकार पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। ऐसे में झारखंड विधानसभा चुनावों में भाजपा सोरेन सरकार को घेरने के लिए महिलाओं की सुरक्षा और युवाओं को रोजगार देने का मुद्दा उठा रही है।

फारूक अब्दुल्ला की गिरफ्तार की मांग को लेकर बजरंग दल का प्रदर्शन

जम्मू । आतंकवादी हमलों में बढ़ोतरी पर नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला की टिप्पणी के खिलाफ सोमवार को जम्मू में बजरंग दल ने प्रदर्शन किया। इस दौरान बजरंग दल वालों ने कहा कि फारूक अब्दुल्ला का बयान सशस्त्र बलों और लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाला है। इसके लिए उन्हें माफी मांगनी चाहिए। बजरंग दल के कार्यकर्ता जम्मू के जनरल बस स्टैंड के बाहर जमा हुए और फारूक अब्दुल्ला और नेशनल कॉन्फ्रेंस के खिलाफ नारेबाजी की। उन्होंने नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष का पुतला भी जलाया तथा मांग की कि फारूक अब्दुल्ला को गिरफ्तार किया जाए। इस मौके पर बजरंग दल जम्मू-कश्मीर के अध्यक्ष राकेश बजरंग ने कहा कि फारूक अब्दुल्ला ने यह कहकर पाकिस्तान के पक्ष में बयान दिया है कि आतंकवादियों को नहीं मारा जाना चाहिए। उन्होंने कहा, जैसा कि आप जानते हैं कि फारूक अब्दुल्ला आमतौर पर देश के खिलाफ बोलते हैं। राकेश ने कहा कि फारूक अब्दुल्ला को सेना और भारत के लोगों से माफी मागनी चाहिए। हम ऐसे बयानों को बर्दाश्त नहीं कर सकते, जब हमारे सैनिक देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे रहे हैं, वह अपनी सेना विरोधी और सरकार विरोधी बयानबाजी के लिए भी जाने जाते हैं। हम उनके खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

पुराने वादे पूरे नहीं किए, नए वादों की बौछार कर रही कांग्रेस और भाजपा : मायावती

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व सीएम मायावती ने भाजपा और कांग्रेस के घोषणा पत्रों पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि इन पार्टियों ने चुनाव में मिथ्या प्रचार और वादों की भरमार लगा रखी है। मायावती ने कहा कि देश में व्यापक स्तर पर गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई, शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, साफ पानी और कानून व्यवस्था जैसी बुनियादी जरूरतों का अभाव है, इससे करोड़ों लोग त्रस्त और परेशान हैं।

मायावती ने भाजपा और कांग्रेस की सरकारों पर आरोप लगाकर कहा कि वे आरोप-प्रत्यारोप को नकारात्मक राजनीति में व्यस्त हैं, खासकर महाराष्ट्र और झारखंड विधानसभा चुनाव को लेकर। उन्होंने कहा, जनता देख रही है कि इनके पिछले वादों का क्या हाल हुआ है। बहनजी ने बताया कि कांग्रेस और भाजपा, दोनों ने अपने चुनावी वादों को पूरा नहीं किया है। इन पार्टियों के वादे होते ही हैं, लोगों को गुमराह करने के लिए, और सरकार बनने के बाद उन्हें भुला दिया जाता है। इसकारण हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक की कांग्रेसी सरकारें पर वादाखिलाफी का आरोप लग रहा है।

मायावती ने उपचुनाव के दौरान भाजपा और कांग्रेस पर आरोप लगाया कि वे जनहित और जनकल्याण से ज्यादा धर्म के कार्यक्रमों में व्यस्त हैं। उन्होंने कहा, बसपा चुनाव में जनता को गुमराह करने वाला कोई घोषणा पत्र जारी नहीं करती है। हमारा उद्देश्य करोड़ों गरीबों, मजलूमों और बेरोजगारों के प्रति ईमानदारी से काम करना है।

मायावती ने कहा कि कांग्रेस और भाजपा के पिछले अनुभवों के मद्देनजर, यह स्वाभाविक है कि जनता उनसे पूछे कि वे अपने वादों को क्यों नहीं निभाते।

कर्नाटक में ऐतिहासिक स्मारकों पर वक्फ बोर्ड ने ठोका दावा...एएसआई ने दिखाया आईना

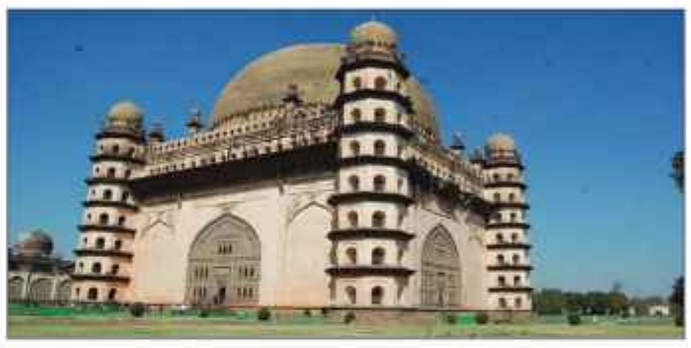

मुंबई (एजेंसी)। बेंगलुरु (ईएमएस)। वक्फ बोर्ड इन दिनों काफी चर्चा में है। वक्फ की संपत्ति को लेकर राजनीतिक गलियारों में जमकर विवाद दिख रहा है। इसी कड़ी में अब वक्फ बोर्ड ने विश्व विरासत घोषित हो चुके ऐतिहासिक स्मारकों पर भी अपना दावा ठोक दिया है। वक्फ बोर्ड ने कर्नाटक के 43 ऐतिहासिक स्मारकों पर दावा ठोका है। इसमें गोल गुम्बज, इब्राहिम रौजा, बारा कमान और बीदर व कलबुर्गी शामिल हैं। इन 53 स्मारकों में से 43 विजयपुरा में हैं। विजयपुरा वक्फ बोर्ड ने 2005 में 43 स्मारकों पर अपना दावा ठोक दिया था। इन ऐतिहासिक स्मारकों का मालिकाना हक वक्फ बोर्ड के पास नहीं है।

नियमों के मुताबिक, एक बार जब किसी ऐतिहासिक स्मारक का मालिकाना हक एएसआई अपने अधिकार क्षेत्र में ले लेता है, तब उस किसी को दूसरे को नहीं भेजा जा सकता है। ऐसी स्थिति में सवाल पैदा होता है, कि आखिर किस आधार पर वक्फ बोर्ड इन संपत्तियों पर अपना दावा ठोक रहा है। एएसआई के अधिकारी के मुताबिक, इन ऐतिहासिक स्मारकों के साथ छेड़छाड़ हो रहा है। इसके लिए सीमेंट और अन्य सामग्री का इस्तेमाल हो रहा है, ताकि उसकी मूल पहचान को बदला जा सके। लेकिन, एएसआई ने स्पष्ट कर दिया है कि इस छेड़छाड़ को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

एएसआई अधिकारियों के मुताबिक, इन ऐतिहासिक स्मारकों में पंखे, एसी, ट्यूबलाइट और टॉयलेट जैसी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं, ताकि इसकी मूल पहचान को बदल सके। इससे यहां आने वाले पर्यटकों को भी खासा परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके पहले वक्फ बोर्ड ने किसानों की जमीन पर भी दावा ठोका था, जिसे देखकर किसानों ने वक्फ बोर्ड संशोधन बिल के संबंध में बनाई गई संयुक्त संसदीय समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल को पत्र लिखा था। इस पत्र में किसानों ने बैठक में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की थी, ताकि वे भी अपना मत खुले दिल से रख सके।

10 नवंबर को सेवानिवृत होंगे चीफ जस्टिस चंद्रचूड़, अयोध्या पर दिया था फैसला

नई दिल्ली,(ईएमएस)। भारत की सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, अगले सप्ताह रिटायर हो रहे हैं। जस्टिस चंद्रचूड़ 10 नवंबर को सेवानिवृत होंगे और यह संयोग है कि नौ नवंबर को अयोध्या मामले में आए फैसले को पांच साल पूरे हो रहे हैं। जस्टिस चंद्रचूड़ गत जुलाई में अयोध्या गए थे और रामलला के दर्शन किए थे। वह संभवत: पहले सीजेआई हैं, जो रामलला के दर्शन के लिए अयोध्या गए। सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने 9 नवंबर 2019 को अयोध्या राम जन्मभूमि मामले में अपना फैसला सुनाया था। इस फैसले में जस्टिस चंद्रचूड़ के अलावा पूर्व प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई, पूर्व प्रधान न्यायाधीश एसए बोबडे, जस्टिस अशोक भूषण और जस्टिस एस अब्दुल नजीर शामिल थे। पीठ के अन्य चार न्यायाधीश पहले ही रिटायर हो चुके हैं। चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ ने हाल ही में अक्टूबर में सुप्रीम कोर्ट की दशहरे की छुट्टियों के दौरान अपने पैतृक गांव के दौरे के दौरान कहा था कि अयोध्या विवाद के समाधान के लिए उन्होंने भगवान से प्रार्थना की थी, जो कि उनके इस बयान की चर्चा का विषय बना। चंद्रचूड़ का कार्यकाल महत्वपूर्ण निर्णयों से भरा है और उनके रिटायर होने के बाद देश के न्यायिक इतिहास में उनके योगदान को याद किया जाएगा।

अखिलेश यादव का बीजेपी पर तंज... चुनाव टालेंगे तो और भी बुरा हारेंगे

लखनऊ (एजेंसी)। त्योहारों को देखते हुए चुनाव आयोग ने वोटिंग को एक हफ्ते तक टालने का फैसला किया है। अब उत्तर प्रदेश, केरल और पंजाब में 13 नवंबर को लेंगी। चुनाव आयोग के इस फैसले के बाद समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने बीजेपी पर तंज कसते हुए कहा कि टालेंगे तो और भी बुरा हारेंगे। उनके इस पोस्ट को सीएम योगी आदित्यनाथ के बटेंगे तो कटेंगे के जवाब के रूप में देखा जा रहा है। बता दें कि 13 नवंबर को होने वाली उपचुनाव की वोटिंग को टालने के लिए कांग्रेस, बीजेपी समेत कई दलों ने चुनाव आयोग से अपील की थी। पार्टियों का कहना था कि कई त्योहारों के चलते 13 नवंबर को वोटिंग कम हो सकती है। हालांकि, चुनाव के नतीजे 23 नवंबर को ही आएंगे। अखिलेश यादव ने एक्स पर लिखा- टालेंगे तो और भी बुरा हारेंगे! पहले मिल्कीपुर का उपचुनाव टाला, अब बाकी सीटों के उपचुनाव की तारीख, बीजेपी इतनी कमजोर कभी न थी। दरअसल बात ये है कि यूपी में महा-बेरोजगारी की वजह से जो लोग पूरे देश में काम-रोजगार के लिए जाते हैं, वो दिवाली और छठ की छुट्टी लेकर प्रदेश आए हुए हैं, और उपचुनाव में बीजेपी को हराने के लिए वोट डालने वाले थे। जैसे ही बीजेपी को इसकी भनक लगी, उसने उपचुनावों को आगे खिसका दिया, जिससे लोगों की छुट्टी खत्म हो जाए और वो बिना वोट डाले ही वापस चले जाएं। ये बीजेपी की पुरानी चाल है- हारेंगे तो टालेंगे।

बीजेपी ने तारीखों में बदलाव के लिए दिया था ज्ञापन

बता दें कि बीजेपी ने उत्तर प्रदेश में होने वाले विधानसभा उप-चुनाव की तारीखों में बदलाव की मांग को लेकर चुनाव आयोग को ज्ञापन दिया था। बीजेपी प्रतिनिधिमंडल ने कहा था कि 15 नवंबर को कार्तिक पूर्णिमा होने की वजह से कुंदरकी, मीरापुर, गाजियाबाद और प्रयागराज में लोग तीन चार दिन पहले इकट्ठे जो जाते हैं। ऐसे में चुनाव आयोग को कार्तिक पूर्णिमा को ध्यान में रखते हुए तारीखों में बदलाव करना चाहिए। बीजेपी की मांग थी कि 13 नवंबर की जगह 20 नवंबर को चुनाव कराए जाएं।

रायबरेली दौरे पर रहेंगे राहुल गांधी, विकास परियोजनाओं का करेंगे शिलान्यास

-उपचुनाव में राहुल प्रचार करेंगे या नहीं चर्चाओं का दौर शुरु

नई दिल्ली, (एजेंसी)। यूपी में विधानसभा की 9 सीटों होने वाले उपचुनाव के बीच कांग्रेस नेता राहुल गांधी मंगलवार को रायबरेली का दौरा करेंगे। इस दौरे में राहुल गांधी कई महत्वपूर्ण बैठकों और उद्घाटन कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। वह जिला समन्वय की बैठक और दिशा की बैठक में शामिल होंगे, जहां अमेठी के सांसद केएल शर्मा भी मौजूद रहेंगे। इसके अलावा राहुल रायबरेली के शहीद चौक का उद्घाटन करेंगे और कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास करेंगे। सांसद राहुल का यह दौरा सुबह 10:30 बजे फुरसतगंज एयरपोर्ट से शुरू होगा, जहां से वह सड़क मार्ग से डिग्री कॉलेज चौराहा पहुंचेंगे और शहीद चौक का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वह कलेक्ट्रेट परिसर स्थित बचत भवन में दिशा की बैठक में हिस्सा लेंगे। इस बैठक का उद्देश्य विकास परियोजनाओं की समीक्षा और समन्वय में सुधार करना है। राहुल गांधी का यह दौरा यूपी उपचुनाव के बीच हो रहा है, जिससे यह सवाल उठ रहे हैं कि क्या वे उपचुनाव में प्रचार करेंगे। हालांकि कांग्रेस ने इस पर कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की है। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव से जब कांग्रेस से सीट शेयरिंग पर पूछा तो उन्होंने पुष्टि की कि उनकी कांग्रेस नेताओं से बातचीत हुई थी। यह उपचुनाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि अखिलेश भी इस बार व्यक्तिगत रूप से प्रचार करने उतरने वाले हैं। आमतौर पर सपा के उम्मीदवार स्थानीय नेताओं के नेतृत्व में ही चुनावी मुकाबला करते रहे हैं, लेकिन इस बार अखिलेश खुद मैदान में होंगे। इस बदलाव को 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले इंडिया गठबंधन को मजबूत बनाने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि अखिलेश और राहुल गांधी का एक साथ उपचुनाव में प्रचार करना कांग्रेस और सपा के गठबंधन को जनता के सामने एक मजबूत विकल्प के रूप में पेश कर सकता है। इंडिया गठबंधन के चलते दोनों पार्टियों का साथ आना, खासतौर पर यूपी जैसे बड़े राज्य में, विपक्ष को एक नई ऊर्जा दे सकता है। हालांकि, राहुल गांधी के प्रचार में शामिल होने की पुष्टि अभी नहीं हुई है, लेकिन इसे लेकर राजनीतिक हलकों में चर्चा शुरू हो गई है। राहुल गांधी का रायबरेली दौरा सिर्फ एक विकास कार्यों की समीक्षा के लिए नहीं है बल्कि कांग्रेस के लिए यूपी में अपना आधार मजबूत करने की दिशा में एक कदम भी माना जा रहा है। यह दौरा कांग्रेस कार्यकर्ताओं को उत्साह और नई दिशा देने का अवसर है, खास कर तब जब यूपी उपचुनाव में पार्टी की स्थिति महत्वपूर्ण मानी जा रही है। उनके दौरे से जहां रायबरेली में कांग्रेस की सक्रियता दिखाई देगी, वहीं उपचुनाव में उनकी उपस्थिति या प्रचार की संभावना विपक्षी गठबंधन के बीच नए समीकरण बनाने में मददगार साबित हो सकती है। ऐसे में आने वाले दिनों में देखना होगा कि राहुल गांधी और अखिलेश यादव एक साथ प्रचार अभियान में उतरते हैं या नहीं।

छठ पूजा नहाय-खाय के साथ आज से होगी शुरु, प्रशासन ने की सभी तैयारियां पूरी

-गंगा और सहायक नदियों के करीब 550 घाटों पर श्रद्धालु करेंगे पूजा

पटना (एजेंसी)। चार दिवसीय छठ महापर्व मंगलवार को नहाय-खाय के साथ शुरु होगा। बुधवार को खरना अनुष्ठान होगा, गुरुवार शाम को पहला अर्घ्य और शुक्रवार सुबह अंतिम अर्घ्य देने के बाद यह पर्व संपन्न हो जाएगा। छठ पूजा पर पटना के घाटों पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है और इसे देखते हुए जिला प्रशासन ने व्यापक तैयारी की हैं। इस बार गंगा नदी का जलस्तर बढ़ने से कुछ चुनौतियां आई, लेकिन जिला प्रशासन ने सभी घाटों को पूरी तरह से तैयार किया है।

पटना में गंगा और सहायक नदियों के करीब 550 घाटों पर श्रद्धालु छठ पूजा करते हैं। पटना नगर निगम ने 102 गंगा घाटों पर छठ पूजा की व्यवस्था की है। इसके अलावा, 45 पार्क और 63 तालाबों पर भी छठ पूजा की जाएगी। सभी घाटों और तालाबों पर जिला प्रशासन द्वारा सुरक्षा और सुविधा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। अधिकारी तैयारियों पर नजर रख रहे हैं।

निगम ने 512 अस्थायी शौचालय, 450 अस्थायी यूरिनल और पीने के पानी के लिए 185 नल लगाए हैं। इसके साथ ही 50 पानी के टैंकर और 37 चापाकल उपलब्ध कराए हैं। 355 अस्थायी चेंजिंग रूम बनाए हैं और 154 वाच टावर सुरक्षा निगरानी के लिए लगाए गए हैं। 97 मुख्य और 13 सहायक नियंत्रण कक्ष और 14 यात्री शेड स्थापित किए हैं।

छठ पूजा के दौरान सुरक्षा के लिए एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की टीमें तैनात की गई हैं। 333 गोताखोर, 306 नाव एवं सिविल डिफेंस के 168 वालंटियर भी तैनात रहेंगे। डीएम पटना ने निर्देश दिया है कि किसी भी प्रकार की नाव का संचालन नहीं होगा, चाहे वह प्रचार-प्रसार के लिए हो या मनोरंजन के लिए। नाव संचालन पर पूरी तरह से प्रतिबंध है और नियमों का उल्लंघन करने वालों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। नदी में लगातार रिवर पेट्रोलिंग की व्यवस्था भी की है।

रिद्धिमान साहा रणजी ट्रॉफी सीजन के बाद क्रिकेट से लेंगे संन्यास

बेंगलुरु (एजेंसी)। नेशनल डेस्क। भारत के अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज रिद्धिमान साहा ने क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करते हुए कहा है कि मौजूदा रणजी ट्रॉफी सीजन उनका आखिरी सीजन होगा।

बता दें कि बंगाल के 40 वर्षीय विकेटकीपर ने 2010 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने के बाद से 40 टेस्ट और नौ एकदिवसीय मैच खेले हैं। त्रिपुरा के साथ खिलाड़ी-संरक्षक के रूप में दो साल बिताने के बाद टीम में वापसी करने वाले साहा वर्तमान में बेंगलुरु में कर्नाटक के खिलाफ बंगाल के चौथे दौर के मैच की तैयारी कर रहे हैं। वह भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली के साथ बैठक के बाद बंगाल लौट आए थे।

उस समय साहा ने संकेत दिया था कि वह बीसीसीआई के सफेद गेंद वाले टूर्नामेंटों में हिस्सा नहीं लेंगे और प्रथम श्रेणी प्रारूप पर ध्यान केंद्रित करेंगे ताकि बंगाल को रणजी का खिताब दिलाने में मदद मिल सके, जो 2019-20 में उनसे नहीं मिला था, जब वे पिछड़ गए थे। अपनी कटुतापूर्ण विदाई के कारणों पर ध्यान न देते हुए साहा ने प्रशासन में भूमिकाओं के बजाय कोचिंग में अवसर तलाशने की उत्सुकता व्यक्त करते हुए -केवल आगे देखने- पर जोर दिया था। पिछले साल केंद्रीय अनुबंध सूची से बाहर किए जाने से पहले साहा लंबे समय तक भारत की लाल गेंद टीम का हिस्सा थे। 2014 में एमएस धोनी के टेस्ट संन्यास के बाद भारत के पहली पसंद के विकेटकीपर बने साहा ने आखिरी बार भारत के लिए दिसंबर 2021 में खेला था, जब माना जाता था कि राहुल द्रविड़ के नेतृत्व वाले तत्कालीन टीम प्रबंधन ने उन्हें बताया था कि भारत आगे बढ़ रहा है। उस समय, जबकि वह यकीनन भारत के सर्वश्रेष्ठ विकेटकीपर थे, ऋषभ पंत के उद्भव ने इसे कठिन बना दिया, हालांकि साहा ने कई मौकों पर दूसरे विकेटकीपर की भूमिका निभाना जारी रखा। बंगाल लौटने पर साहा ने युवा अभिषेक पोरेल का गहन मार्गदर्शन किया, जिन्होंने बंगाल के लिए सभी प्रारूपों में नियमित खिलाड़ी बनने की दिशा में कदम बढ़ाया है। 22 वर्षीय विकेटकीपर हाल ही में मेगा नीलामी से पहले दिल्ली कैपिटल्स द्वारा रिटेन किए गए चार खिलाड़ियों में शामिल थे। जहां तक उनके अपने आईपीएल करियर की बात है, तो संभावना है कि साहा नीलामी में शामिल नहीं होंगे। अब तक साहा ने 2008 में आईपीएल की शुरुआत के बाद से इसके हर संस्करण में भाग लिया है और हाल ही में वह गुजरात टाइटन्स के साथ थे, जिसके साथ उन्होंने 2022 में खिताब जीता था।

साहा ने पहले कोलकाता नाइट राइडर्स, चेन्नई सुपर किंग्स, सनराइजर्स हैदराबाद और पंजाब किंग्स का भी प्रतिनिधित्व किया है, जिनके लिए उन्होंने 2014 के फाइनल में एक यादगार शतक लगाया था, जहां वे उपविजेता रहे थे। अंत में साहा ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा, -क्रिकेट में एक शानदार सफर के बाद,

यह सीजन मेरा आखिरी सीजन होगा। मैं बंगाल के लिए आखिरी बार खेलने को लेकर गौरवान्वित हूं। रिटायरमेंट से पहले मैं सिर्फ रणजी ट्रॉफी में खेलूंगा।-

पाक के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज आसान नहीं होगी : मैक्सवेल

सिडनी (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर ग्लेन मैक्सवेल ने कहा है कि पाकिस्तान के खिलाफ होने वाली सीरीज आसान नहीं होगी। ऑस्ट्रेलियाई टीम को यहां एकदिवसीय और टी20 सीरीज खेलनी है। मैक्सवेल ने कहा कि पाकिस्तान की टीम अपनी अप्रत्याशित खेल शैली के कारण किसी को भी हैरान कर सकती है। मैक्सवेल ने कहा कि ऑस्ट्रेलियाई टीम को पाक के खिलाफ घरेलू सीरीज में अपनी पूरी ताकत लगानी होगी क्योंकि पाक टीम को घरेलू हालातों का लाभ मिलेगा।

मैक्सवेल ने उन चुनौतियों को भी बताया जिनका सामना ऑस्ट्रेलिया की टीम को पाकिस्तान के खिलाफ घरेलू सीरीज में करना पड़ सकता है। पाकिस्तान टीम नए कप्तान मोहम्मद रिजवान की अगुवाई में पहली सीरीज खेलेगी। मैक्सवेल ने कहा कि, मुझे लगता है कि हमें सीरीज में कठिन मुकाबले के लिए तैयार रहना चाहिए। इसका कारण है कि आप निश्चित नहीं हैं कि क्या हो सकता है और वे खेल के सभी क्षेत्रों में बहुत खतरनाक है। उनके पास अच्छे स्पिनर हैं, उनके पास अच्छे तेज गेंदबाज हैं और उनके पास ऐसे बल्लेबाज हैं जो उनके लिए मैच जीत सकते हैं। मैक्सवेल ने साथ ही कहा कि, मुझे लगता है कि जब आप इस सफेद गेंद वाली सीरीज में उनके खिलाफ खेलेंगे तो आप उन उतार चढ़ावों को देखेंगे और ये बहुत मनोरंजक होने वाला है। वे शानदार क्रिकेट खेलते हैं जहां सचमुच कुछ भी हो सकता है। हमारे लिए अपनी चीजों पर ध्यान केंद्रित करना कठिन होगा, क्योंकि वे आपकी किसी भी योजना के लिए बहुत नुकसानदेह हो सकते हैं। पाकिस्तान में इस बार आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी खेली जानी चाहिये। पाक राष्ट्रीय क्रिकेट टीम तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज 4 नवंबर से 10 नवंबर तक ऑस्ट्रेलिया के अलग अलग मैदानों पर खेलेगी। पहला मैच मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर खेला जाएगा, इसके बाद 8 नवंबर को एडिलेड में दूसरा एकदिवसीय खेला जाएगा. तीन मैचों की वनडे सीरीज का अंतिम मैच पर्थ में खेला जाएगा। इसके बाद तीन मैचों की टी20 सीरीज होगी।

एक ओवर में सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ियों में शीर्ष पर हैं श्रेयस

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में एक ओवर में सबसे अधिक रन बनाने वाले खिलाड़ियों में चार भारतीय भी हैं। इसमें नंबर एक पर है श्रेयस अय्यर। आजकल भारतीय टीम से बाहर चल रहे श्रेयस ने एक ओवर में 31 रन बनाए हैं। श्रेयस ने साल 2019 में वेस्टइंडीज के खिलाफ ये रिकॉर्ड बनाया था। श्रेयस ने विशाखापत्तनम एकदिवसीय में वेस्टइंडीज के गेंदबाज रोस्टन चेज के एक ही ओवर में 31 रन बना दिये थे इस दौरान श्रेयस ने 4 छक्के और एक चौका लगाया था। श्रेयस ने तब 32 गेंदों पर 53 रन बनाये थे। वहीं महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर दूसरे नंबर है हैं। सचिन ने 1999 में हैदराबाद में हुए एकदिवसीय में न्यूजीलैंड के खिलाफ एक ओवर में ही 28 रन बटोर थे। सचिन ने तब क्रिस ड्रम के एक ओवर में ही चौकों और छक्कों के साथ 150 गेंदों पर 186 रन बनाये थे।

तीसरे नंबर पर तेज गेंदबाज जहीर खान का नाम है। जहीर ने साल 2000 में जिम्बाब्वे के खिलाफ बल्लेबाजी करते हुए जोधपुर एकदिवसीय में एक ओवर में 27 रन बना दिये। जहीर ने रन तेज गेंदबाज हेनरी ओलंगा के ओवर में बनाए थे। इस दौरान उन्होंने 4 छक्के लगाये थे। इसके अलावा चौथे नंबर पर पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग हैं। सहवाग ने साल 2005 में श्रीलंका के खिलाफ एक ओवर में 26 रन बटोरे थे जिसमें 5 चौके और एक छक्का लगा था। सहवाग ने ये रन श्रीलंका के गेंदबाज दिलहारा लोकुहेटिज की गेंदों पर बनाए थे।

सुनील गावस्कर ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज से पहले भारतीय क्रिकेट टीम से किया विशेष आग्रह

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्पोर्ट्स डेस्क -भारत के महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने टीम इंडिया से ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज से पहले अभ्यास मैच खेलने का आग्रह किया है। भारत को इंडिया ए के साथ एक इंट्रा-स्क्वाड अभ्यास मैच खेलना था, जिसे उन्होंने रद्द कर दिया है। हालांकि गावस्कर ने टीम को मैचों के बीच अभ्यास मैच खेलने की सलाह दी है। पूर्व बल्लेबाज ने कहा कि जो युवा खिलाड़ी ऑस्ट्रेलिया में कभी नहीं खेले हैं, उन्हें खुद को परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेना चाहिए। ध्रुव जुरेल, सरफराज खान और यशस्वी जायसवाल जैसे भारतीय युवा खिलाड़ी ऑस्ट्रेलिया में अपना पहला टेस्ट खेलेंगे और इसलिए उन्हें गति और उछाल के अभ्यस्त होने में कुछ समय लग सकता है। गावस्कर ने कहा, 'मुझे सच में लगता है कि उन्हें अभ्यास मैच खेलना चाहिए। टेस्ट मैचों के बीच के अंतराल में उन्हें वास्तव में अभ्यास मैच खेलने चाहिए। जरूरी नहीं कि सीनियर खिलाड़ियों के लिए। लेकिन जूनियर खिलाड़ियों के लिए भी जिन्होंने

पहले कभी ऑस्ट्रेलिया में नहीं खेला है। यशस्वी जायसवाल, सरफराज खान, ध्रुव जुरेल्स ये सभी युवा बल्लेबाज हैं। यहां तक कि ऑस्ट्रेलिया ए टीम या क्वींसलैंड जैसी स्टेट टीम के खिलाफ भी। जूनियर खिलाड़ियों को ऑस्ट्रेलिया में उछाल और पिचों के अभ्यस्त होने का अवसर दिया जाना चाहिए।' गावस्कर ने आगे भारत को सलाह दी कि वे जितना हो सके उतना अभ्यास करें और थ्रो डाउन के बजाय नियमित गेंदबाजी खेलने पर ध्यान केंद्रित करें। उन्होंने कहा, 'बस खुद पर भरोसा रखें। जितना हो सके उतना अभ्यास करें। मुझे लगता है कि थ्रोडाउन का सामना करना कुछ हद तक फायदेमंद है। लेकिन नियमित गेंदबाजी का सामना करना ज्यादा जरूरी है। तेज गेंदबाजों का सामना करें। बेशक (जसप्रीत) बुमराह का नहीं, क्योंकि बुमराह आपको मार सकते हैं। लेकिन आप दूसरों से 22 गज की बजाय 20 गज की दूरी से गेंदबाजी करने के लिए कह सकते हैं। इसलिए, गेंद जल्दी बल्ले पर आती है।' इस बीच, घरेलू धरती पर न्यूजीलैंड के खिलाफ शर्मनाक व्हाइटवॉश के बाद भारत खुद को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (WTC) स्टैंडिंग में एक अनिश्चित स्थिति में पा बैठा है। रोहित शर्मा की अगुवाई वाली टीम 58.33ब अंक प्रतिशत के साथ स्टैंडिंग में दूसरे स्थान पर है और अब उसे WTC फाइनल के लिए अपने दम पर क्वालीफाई करने के लिए अपने अगले पांच मैचों में से चार जीतने की जरूरत है। इसलिए भारत को अपने तीसरे लगातार फाइनल के लिए क्वालीफाई करने के लिए आगामी सीरीज में ऑस्ट्रेलिया को हराने की सख्त जरूरत है, जो इस समय एक बहुत बड़ा काम है।

शमी मध्यप्रदेश के खिलाफ होने वाले रणजी मुकाबले से वापसी करेंगे

नई दिल्ली ।भारतीय टीम से बाहर चल रहे तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी अब रणजी ट्रॉफी के जरिये अपनी फिटनेस साबित करने उतरेंगे।शमी टखने की सर्जरी के बाद से ही टीम से बाहर हैं।ऐसे में अब वह घरेलू क्रिकेट से अपनी फिटनेस हासिल करना चाहते हैं।शमी के मध्य प्रदेश के खिलाफ 13 नवंबर से इंदौर में होने वाले मुकाबले में अपनी घरेलू टीम बंगाल की ओर से खेलने की संभावनाएं हैं।शमी हालांकि कर्नाटक के खिलाफ मुकाबले में नहीं खेलेंगे।शमी प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में आराम से वापसी करना चाहते हैं जिससे चोटिल होने का खतरा न रहे।शमी ने हाल में द एम चिन्नास्वामी स्टेडियम के नेट्स में शुभमन गिल को गेंदबाजी भी की थी।इसके बाद शमी ने एक कार्यक्रम में कहा कि वह अब उन्हें दर्द नहीं है, इसलिए वह कुछ घरेलू मैच खेलेंगे।अब देखना होगा कि शमी 14 दिसंबर से ब्रिस्बेन में शुरू होने वाले बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तीसरे टेस्ट के लिए फिट हो पाते हैं या नहीं।शमी ने अंतिम बार एकदिवसीय विश्वकप 2023 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फाइनल खेला था।उसके बाद से ही वह टीम से बाहर हैं।

यह देखना दिलचस्प होगा कि भारत किस तरह वापसी करता है : गिलक्रिस्ट

नई दिल्ली ।ऑस्ट्रेलिया के पूर्व विकेटकीपर-बल्लेबाज एडम गिलक्रिस्ट ने कहा है कि न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में 3-0 की हार के बाद भारत जिस तरह वापसी करेगा, उसे देखना दिलचस्प होगा, जब वे आगामी बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज में ऑस्ट्रेलिया का सामना करेंगे।

भारत न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू मैदान पर 3-0 की अभूतपूर्व हार झेलने के बाद इस महत्वपूर्ण सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया का दौरा करेगा जो 12 वर्षों में घरेलू मैदान पर उसकी पहली टेस्ट सीरीज हार है। गिलक्रिस्ट ने कहा, 'मैं उनसे आसानी से हारने की उम्मीद नहीं कर रहा हू, लेकिन मुझे लगता है कि उस हार और इस तथ्य के बाद कि यह एक क्लीन स्वीप था - मुझे याद नहीं है कि उनके साथ ऐसा कब हुआ है, सिर्फ एक सीरीज हारना, क्लीन स्वीप की तो बात ही छोड़िए। मुझे लगता है कि इससे आतंरिक रूप से कुछ सवाल उठेंगे और एक जुनूनी क्रिकेट राष्ट्र से उस बदलाव को देखने का दबाव, अपेक्षा और इच्छा, उन सभी खिलाड़ियों के कंधों पर भारी पड़ेगी।' गिलक्रिस्ट ने कहा, 'वहां (टीम में) कुछ उम्रदराज खिलाड़ी हैं जो शायद खुद पर थोड़ा संदेह करना शुरू कर दें।उस भारतीय टीम में कुछ उच्च श्रेणी के क्रिकेटर हैं। यह देखना दिलचस्प होगा कि वे उस चुनौती से कैसे उबरते हैं।'

गंभीर पर उठ रहे सवाल, ऑस्ट्रेलिया दौरे में टीम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा तो बढ़ेंगी मुश्किलें

मुम्बई ।भारतीय टीम की न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में करारी हार से टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर पर भी सवाल उठने लगे हैं।गंभीर को अभी तीन माह पहले ही कोच बनाया गया था।उसके बाद से ही भारतीय टीम का प्रदर्शन कुछ विशेष नहीं रहा है।गंभीर को टीम चयन मामलों में भी पूरे अधिकार दिये गये थे उसके बाद भी वह परिणाम नहीं दे पाये हैं।अब गंभीर की ऑस्ट्रेलिया दौरे में कड़ी परीक्षा होगी। वहीं अगर ऑस्ट्रेलिया दौरे पर भारतीय टीम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहता तो गंभीर की मुश्किलें बढ़ जाएंगी। गंभीर के कोच बनने के बाद भारतीय टीम 27 साल में पहली बार श्रीलंका से एकदिवसीय सीरीज हारी।इसके बाद अब उसे न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में क्लीन स्वीप का शिकार होना पड़ा है।इससे पहले भारतीय टीम कभी भी तीन या उससे अधिक मैचों की सीरीज में नहीं हारी है।

हालांकि उनके बचाव में कहा जा रहा है कि टीम के साथ कोच केवल योजना ही बना सकता है पर स्पिनरों के खिलाफ भारतीय बल्लेबाजों की कमजोरी जानने के बाद भी मुंबई में पूरी तरह से स्पिनरों की सहायक पिच बनाने पर भी सवाल उठे हैं। मुंबई में न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट के दूसरे दिन तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज को नाइटवाचमैन के रूप में भेजने और पहली पारी में सरफराज खान को आठवें नंबर पर भेजने पर भी सवाल उठ रहे हैं।बीसीसीआई के एक अधिकारी ने कहा, 'गंभीर को ऐसा अधिकार दिया गया है जो इससे पहले कोच रहे रवि शास्त्री और राहुल द्रविड़ को नहीं मिला था। बीसीसीआई के नियम कोच को चयन समिति की बैठकों का हिस्सा बनने की अनुमति नहीं देते हैं पर ऑस्ट्रेलिया दौरे की चयन बैठक के लिए गंभीर को अपने सुझाव देने का अवसर दिया गया।' बोर्ड के इस अधिकारी ने कहा, 'दौरे के महत्व को देखते हुए मुख्य कोच को इसमें भाग लेने की अनुमति दी गई थी।'

वसीम अकरम का दावा- टेस्ट क्रिकेट में पाकिस्तान भारत को हरा देगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। तेज गेंदबाज वसीम अकरम ने एक साहसिक दावा किया कि पाकिस्तान टेस्ट प्रारूप में टर्निंग ट्रैक पर भारत से आगे निकलने की क्षमता रखता है। भारतीय टीम को बीते दिनों ही अपने टर्निंग ट्रैक पर न्यूजीलैंड से शर्मनाक सीरीज हार मिली थी, जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में चल रही है। रविवार को न्यूजीलैंड ने वो कर दिखाया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। भारत को 12 साल बाद घरेलू मैदान पर पहली बार टेस्ट सीरीज में हार दिलाने के बाद कीवी टीम 24 साल बाद टेस्ट क्रिकेट में भारत का सूपड़ा साफ करने वाली पहली टीम बन गई है।

पाकिस्तान और भारत आखिरी बार 2007 में एक ही स्थान पर टेस्ट मैच खेलने उतरे थे, जिसे भारत ने जीता था। तब से एशियाई दिग्गज आईसीसी और एशिया कप टूर्नामेंट में एक-दूसरे से भिड़े नहीं हैं। हाल के नतीजों के बाद कीवी टीम अपनी

अप्रत्याशित जीत का जश्न मना रही है। वसीम को लगता है कि पाकिस्तान के पास बॉल टर्नर के पक्ष में घूमने वाली पिचों पर भारत को हराने की क्षमता है।

अकरम ने सोमवार को पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच पहले वनडे की कमेंट्री के दौरान अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पाकिस्तान के पास स्पिनिंग ट्रैक पर अब भारत को टेस्ट में हराने का मौका है। उन्हें न्यूजीलैंड ने घरेलू मैदान पर 3-0 से हराया है। बता दें कि जहां भारत को स्पिनिंग ट्रैक पर हार का स्वाद चखना पड़ा, वहीं पाकिस्तान ने इंग्लैंड पर अपनी हालिया घरेलू सीरीज जीत के दौरान ऐसी परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन किया है। मुल्तान में हैरी ब्रूक और जो रूट की यादगार पारी के बाद पाकिस्तान शुरुआती टेस्ट हार गया। लेकिन इसके बाद नई चयन समिति ने कुछ नए चेहरों को टीम में शामिल किया जिन्होंने शानदार प्रदर्शन किया। आगामी दो टेस्ट के लिए स्पिनिंग ट्रैक तैयार किए गए थे। साजिद खान और नोमान अली ने सूखी हुई सतहों पर शानदार प्रदर्शन किया और 40 में से 39 विकेट हासिल किए और पाकिस्तान को सीरीज जीत दिलवा दी।

सामने आई आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन की तारीख, जानें कब-कहां होगा आयोजन

नई दिल्ली।इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की आगामी बड़ी नीलामी नवंबर 2024 के अंतिम हफ्ते में सऊदी अरब की राजधानी रियाद में होना तय हुआ है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सूत्रों ने सोमवार को इसकी पुष्टि कर दी है।

आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन का वेन्यू

आईपीएल 2025 के लिए मेगा ऑक्शन की तारीख और वेन्यू को लेकर लंबे समय से अटकलें लगाई जा रही थी, लेकिन अब इसे भारत के बाहर आयोजित किया जा सकता है।अब यह लगभग तय हो चुका है कि मेगा ऑक्शन सऊदी अरब की राजधानी रियाद में है। बीसीसीआई ने रियाद को चुने जाने का कारण वहां की बेहतरीन लॉजिस्टिकल सुविधा को बताया है।

कब होगा आयोजन

बीसीसीआई के सूत्र ने नाम जाहिर नहीं करने की शर्त पर एजेंसी को बताया, 'आईपीएल नीलामी रियाद में होगी और यह फ्रेंचाइजी को बता दिया गया है। संभावित तिथियां 24 और 25 नवंबर हैं।आईपीएल के वैश्विक विस्तार को ध्यान में रखते हुए यह फैसला लिया जा सकता है।

स्टार खिलाड़ियों के लिए लगेगी बोली

इस बार नीलामी बड़ी होगी जिसमें ऋषभ पंत, लोकेश राहुल, श्रेयस अय्यर और अर्शदीप सिंह जैसे भारत के स्टार खिलाड़ियों के लिए बोली लगेगी।10 फ्रेंचाइजी के पास 204 खिलाड़ियों को खरीदने के लिए 641.5 करोड़ रुपये की राशि है।इन 204 स्थानों में से 70 स्थान विदेशी खिलाड़ियों के लिए हैं।अब तक 10 फ्रेंचाइजी ने 46 खिलाड़ियों को रिटेन (टीम में बरकरार रखने) करेन के लिए सामूहिक रूप से 558.5 करोड़ रुपये खर्च किए हैं।

आलोचकों पर बरसे रोहित राजपाल, खिलाड़ी जब तक चाहें तभी तक कप्तान बना रहूंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के गैर खिलाड़ी डेविस कप टेनिस कप्तान रोहित राजपाल ने अपने आलोचकों पर निशाना साधा है। राजपाल ने कहा है कि कुछ लोग डेविस कप कप्तान के रूप में मेरी योग्यता पर सवाल उठा रहे हैं पर ऐसे लोगों को समझना चाहिये कि मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो जबरदस्ती कप्तान बना रहे। साथ ही कहा कि मैं तभी तक कप्तान रहूंगा जब तक कि खिलाड़ी चाहेंगे। राजपाल स्वीडन के खिलाफ डेविस कप मुकाबले में भारतीय टीम की 0- 4 से हार के बाद से ही आलोचना झेल रहे हैं। उसी को लेकर इस खिलाड़ी ने कहा कि कि मैं भारतीय टेनिस समुदाय का हिस्सा हूं और उससे सभी प्रकार से जुड़ा हूं। टेनिस मेरा जीवन है इसलिए मैं भारतीय टेनिस समुदाय के

बारे में कोई भी गलत बात नहीं सोच सकता।

राजपाल ने कहा, ' मैं किसी का इस तरह अनादर करने की सोच भी नहीं सकता हालांकि गुस्से में एक बार मैंने आक्रामक प्रतिक्रिया दी थी पर मुझे इस प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं देनी चाहिये थी। उस समय मेरी टीम मेरे साथ बैठी थी ऐसे में अलोचना से मैंने अपमानित सा महसूस किया इसलिए आलोचकों को लेकर कहा कि कौन मुझे बाहर करना चाहता है। राजपाल 2019 में कप्तान बने थे जब तत्कालीन कप्तान महेश भूपति ने सुरक्षा कारणों से पाकिस्तान जाने से मना कर दिया था। उनकी नियुक्ति के समय उनकी योग्यता पर सवाल उठाये गए थे क्योंकि उन्होंने अपने कैरियर में एकमात्र डेविस कप मैच कोरिया के खिलाफ 1990 में खेला था। वह 1990 बीजिंग एशियाई खेल में कांस्य पदक जीतने वाली टीम का हिस्सा थे। वहीं यह पूछने पर कि क्या वह डेविस कप में भारत की कप्तानी के योग्य हैं, राजपाल ने कहा, '' यह फैसला कार्यकारी समिति लेती है। उसमें कई लोग हैं जो टेनिस जानते हैं और बहुत साल से खेल प्रशासन में हैं और वे संतुलित फैसले लेते हैं।'' उन्होंने कहा, '' जिस दिन मुझे लगेगा कि खिलाड़ियों को लग रहा है कि कोई और बेहतर काम कर सकता है तो मैं स्वयं पद छोड़ दूंगा।

रोहित और विराट ने दिलीप ट्रॉफी में खेलने से मना किया था

मुम्बई ।भारतीय क्रिकेट टीम की न्यूजीलैंड के खिलाफ हार के बाद एक बार फिर अनुभवी खिलाड़ियों के अभ्यास मैच नहीं खेलने का सवाल उठा है। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने विराट कोहली और रोहित शर्मा को टेस्ट सीरीज से पहले तैयारी के लिए दलीप ट्रॉफी में खेलने को कहा था पर इन दोनों ने ही इंकार कर दिया था। भारत को न्यूजीलैंड ने तीनों ही मैच हराये। तीसरे टेस्ट में भारतीय बल्लेबाजी क्रम 147 रनों के आसान लक्ष्य का पीछा करते हुए बिखर गया, भारत तीसरा और अंतिम टेस्ट 25 रनों से हार गया।केवल ऋषभ पंत ही खेल पाये।इससे एक बार फिर सीरीज से पहले अभ्यास मैच नहीं खेलने की कमी उभरकर सामने आई है।/ रिपोर्ट केअनुसार रोहित शर्मा, विराट कोहली, रविचंद्रन अश्विन और रवींद्र जडेजा को चयन समिति ने दलीप ट्रॉफी में खेलने का अवसर दिया था पर इन्होंने थकान की बात करते हुए मना कर दिया था।न्यूजीलैंड के खिलाफ चुनी गई टीम में शामिल केएल राहुल, शुभमन गिल और ऋषभ पंत ने ही अभ्यास मैच खेला था।.

संजय मांजरेकर ने रोहित शर्मा की तकनीक में एक बड़ी खामी को किया उजागर

मुंबई (एजेंसी)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने टेस्ट में खराब फॉर्म के बीच भारतीय कप्तान रोहित शर्मा की तकनीक में एक बड़ी खामी को उजागर किया है। भारतीय कप्तान अपने सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में नहीं हैं और भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू मैदान पर 0-3 से शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। रोहित की टेस्ट में उनके आक्रामक रवैये के लिए आलोचना की गई है क्योंकि वह बड़े शॉट खेलते हुए आउट हो रहे हैं।

रोहित की तकनीक का विश्लेषण करते हुए मांजरेकर ने कहा, 'मैं कभी नहीं कहूंगा कि वह लापरवाह है क्योंकि वह रन बनाने और टीम को जीत दिलाने के लिए अपना खुद का तरीका ढूंढ रहा है। वह स्पष्ट रूप से अब अपने डिफेंस पर भरोसा नहीं करता है, आप देख सकते हैं कि, एक एलबीडब्ल्यू अपील थी और इससे वह और भी अधिक अस्थिर महसूस कर रहा होगा। इसलिए अगली चीज जो वह करने की कोशिश करता है वह है जवाबी हमला और उसने ऐसा किया क्योंकि लक्ष्य बहुत बड़ा नहीं था, और कौन जानता है कि यहां-वहां कुछ शॉट और वह शायद बांग्लादेश के रन चेज को दोहरा सकता था।'

मांजरेकर ने कहा कि सलामी बल्लेबाज अपने बड़े शॉट को गलत तरीके से मार रहा है, जिसने हाल के दिनों में उसे नीचे गिरा दिया है। उन्होंने कहा, 'लेकिन आउट होने के लिए उन्होंने जो शॉट खेला, उसमें वह गेंद को सिर्फ कनेक्ट करने के बजाय स्टैंड में मारने की कोशिश कर रहे थे। वह अपने कुछ बड़े शॉट से चूक रहे हैं। पहले टेस्ट मैच में भी ऐसा ही हुआ था, जिसमें उन्होंने आगे बढ़कर गेंद को मैदान से बाहर मारने की कोशिश की थी, इसलिए वह अपने कई आक्रामक शॉट गलत मार रहे हैं और उन्हें अपने डिफेंस पर पूरा भरोसा नहीं है। इसलिए रोहित शर्मा के लिए यह वर्तमान में एक बड़ी समस्या है।'

मौजूदा घरेलू टेस्ट सीजन में अब तक रोहित ने दस पारियों में 13.30 की औसत से 133 रन बनाए हैं जिसमें उनके नाम सिर्फ एक अर्धशतक है। भारतीय कप्तान का फॉर्म चिंताजनक रहा है क्योंकि उन्हें अगली बार पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया का दौरा करना है।

समाचार गेट
TITLE CODE : HARHIN11569
स्वामी (मुद्रक, प्रकाशक) रवीना यादव द्वारा साई प्रिंटिंग प्रेस, डी-85, सेक्टर-6, नोएडा 201301, उत्तर प्रदेश से मुद्रित करवाकर कार्यालय मकान नंबर 2, निभर सेक्टर-61, विलेज मलेरना, बल्लभगढ़ फरीदाबाद, (हरियाणा) से प्रकाशित किया। संपादक: कृष्णा शर्मा। संपादकीय कार्यालय: मकान नंबर 2, निभर सेक्टर-61, विलेज मलेरना, बल्लभगढ़ फरीदाबाद, (हरियाणा) पीआरपी एक्ट के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र फरीदाबाद न्यायालय होगा। कानूनी सलाहकार: बृजमदत शर्मा, 9818180269, ईमेल : krishna24news@gmail.com

परम सुंदरी में बिजनेस टाइकून का किरदार निभाएंगे सिद्धार्थ, जान्हवी की भूमिका का भी खुलासा

सिद्धार्थ मल्होत्रा और जान्हवी कपूर की जोड़ी ने प्रशंसकों के बीच उत्साह बढ़ा दिया है। खबर है कि दोनों कलाकार पहली बार किसी प्रोजेक्ट पर साथ काम कर रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सिद्धार्थ और जान्हवी एक क्रॉस-कल्चरल लव स्टोरी परम सुंदरी में स्क्रीन स्पेस शेयर करते नजर आएंगे। तुषार जलोटा द्वारा निर्देशित यह फिल्म कथित तौर पर दिसंबर में पलोर पर जाएगी। फिल्म शुरू होने से पहले सिद्धार्थ और जान्हवी के किरदारों के बारे में जानकारी सामने आई है।

फिल्म में सिद्धार्थ और जान्हवी का किरदार रिपोर्ट्स के अनुसार, सिद्धार्थ मल्होत्रा और जान्हवी कपूर की रोमांटिक कॉमेडी फिल्म विपरीत आकर्षण की एक क्लासिक कहानी है। सिद्धार्थ का किरदार दिल्ली से है, जबकि जान्हवी का किरदार केरल से है। बताया गया है कि तुषार जलोटा निर्देशित इस फिल्म में सिद्धार्थ एक अमीर बिजनेस टाइकून की भूमिका निभाएंगे। जान्हवी के किरदार के बारे में बताया बताया गया कि जान्हवी एक आधुनिक कलाकार की भूमिका निभा रही हैं, जिसके विचार और मूल्य मजबूत हैं। उनका किरदार केरल की एक दक्षिण भारतीय महिला का है। फिल्म में दिखाया गया है कि कैसे दोनों अलग-अलग व्यक्तित्व होने के बावजूद प्यार में पड़ जाते हैं। उनकी फिल्म का पहला शेड्यूल सिद्धार्थ के साथ दिल्ली में शुरू होगा। इसके बाद केरल में कुछ समय बिताया जाएग और बाद में बाकी शूटिंग मुंबई के एक स्टूडियो में होगी। स्टूडियो में दो बड़े सेट बनाए जाएंगे। एक सेट विशाल घर का होगा, जबकि दूसरा पारंपरिक केरल के घरों के अंदरूनी हिस्सों को दर्शाएगा।

परम सुंदरी के बारे में आगे बताया गया कि अगर चीजें योजना के अनुसार होती हैं तो फिल्मांकन फरवरी 2025 तक पूरा हो जाएगा।

वरुण धवन की आने वाली फिल्म की अभिनेत्री हुई तय

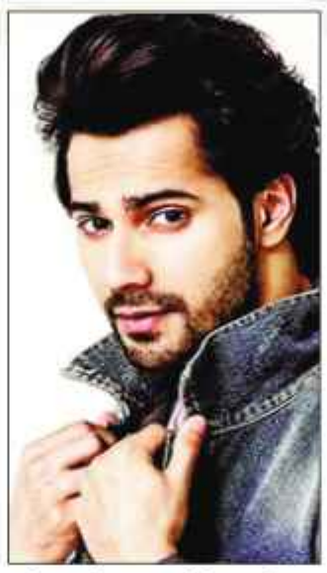

वरुण धवन के करियर की गाड़ी बहुत ही शानदार चल रही है। वह हर तरह की फिल्मों का हिस्सा बन रहे हैं, अपना एक्टिंग टैलेंट दर्शकों के सामने लगा रहे हैं। जल्द ही वरुण अपने पिता के साथ रोमांटिक कॉमेडी फिल्म भी करने वाले हैं। इस फिल्म का नाम है जवानी तो इश्क होना है रखा गया है। अब तक इस फिल्म के लिए हीरोइन की तलाश की जा रही थी, अब खबर मिली है कि फिल्म में वरुण के अपोजिट हीरोइन का नाम तय कर लिया गया है।

पूजा हेगड़े के साथ रोमांस करेंगे वरुण

फिल्म है जवानी तो इश्क होना है में वरुण के साथ जिस हीरोइन को लिया गया है, उनका नाम पूजा हेगड़े है। पूजा बॉलीवुड और साउथ की फिल्मों में जाना-पहचाना नाम हैं। उन्होंने सलमान खान से लेकर ऋतिक रोशन जैसे कलाकारों के साथ पर्दे पर इश्क फरमाया है। पूजा हेगड़े, ऋतिक रोशन के साथ फिल्म मोहनजोदड़ो में नजर आईं, साथ ही उन्होंने सलमान खान के साथ फिल्म किसी का भाई किसी की जान में बतौर हीरोइन काम किया। अब वह वरुण के साथ है जवानी तो इश्क होना है में नजर आएंगी। इस फिल्म में वह वरुण के साथ रोमांस करेंगी। पूजा हेगड़े भी वरुण धवन के साथ फिल्म करने को लेकर खुश हैं। उनका कहना है कि वह लंबे समय से अलग किस्म के रोल तलाश रही हैं।

मौजूदा काम खत्म कर करेंगे वरुण शूटिंग

अभी तो वरुण धवन अपनी एक फिल्म बेबी जॉन को लेकर व्यस्त हैं। यह एक एक्शन थ्रिलर फिल्म है, इसमें वरुण का अलग ही अंदाज नजर आएगा। जब वह इस फिल्म के प्रमोशन को पूरा कर लेंगे, तब ही अपने पिता डेविड धवन की अगली फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे।

अगले साल आएंगी कुछ और फिल्में भी

वरुण धवन है जवानी तो इश्क होना है के अलावा एक और फिल्म में भी अगले साल नजर आ सकते हैं। जिसमें उनके साथ जाह्नवी कपूर होंगी। इस फिल्म का नाम सत्री संस्कारी की तुलसी कुमारी है। जाह्नवी और वरुण की जोड़ी पर्दे पर अच्छी नजर आती है, वे पहले भी फिल्म बवाल (2023) में साथ नजर आ चुके हैं।

श्री श्री रविशंकर का किरदार निभाएंगे विक्रांत मैसी!

हिंदी फिल्मों में जब से विक्रांत मैसी ने कदम रखा है अलग किस्म के किरदार किए हैं। वह बतौर कलाकार अपने किरदारों के साथ खूब प्रयोग करते हैं। अपने कंफर्ट जोन से बाहर निकलकर किरदार को पर्दे पर जीवंत कर देते हैं। यही कारण है कि उनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई करती हैं। साथ ही बतौर कलाकार भी उन्हें खूब तारीफें मिलती हैं। जल्द ही वह एक अलग तरह की भूमिका करते हुए नजर आएंगे। अपनी आने वाली फिल्म में वह आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर की भूमिका निभाएंगे।

फिल्म में दिखाई जाएगी श्री श्री रविशंकर की जीवन यात्रा

श्री श्री रविशंकर की बायोपिक में उनकी जीवन यात्रा को दिखाया जाएगा, उनके मानवतावादी कामों की झलक मिलेगी। उनके शांति और प्रेम को संदेश को फिल्म के जरिए देश और दुनिया को दिखाया जाएगा। इसी यात्रा को विक्रांत मैसी बखूबी दिखाने की पूरी कोशिश करना चाहते हैं।

न्याय करेंगे गुरु जी की भूमिका के साथ

साल 2023 में रिलीज हुई विक्रांत मैसी की फिल्म 12वीं फेल को खूब सराहा गया। वहीं इसी साल रिलीज हुई विक्रांत की फिल्म सेक्टर 36 भी बहुत चर्चित रही। यह फिल्म नोएडा के निठारी कांड से प्रेरित रही। जिस तरह से विक्रांत ने इन फिल्मों में अपने किरदार निभाए हैं, उससे यह तो उम्मीद की जा सकती है कि वह श्री श्री रविशंकर की बायोपिक के साथ भी पूरा न्याय करेंगे।

नयनतारा की डॉक्यू फिल्म की रिलीज डेट का खुलासा

अभिनेत्री नयनतारा इन दिनों अपनी डॉक्यू फिल्म को लेकर सुर्खियों में हैं, जिसका नाम नयनतारा- बियॉन्ड द फेयरी टेल है। इस फिल्म में अभिनेत्री के निजी जिंदगी से जुड़े अनसुने पहलुओं को दिखाया जाएगा। अब इस डॉक्यू फिल्म पर नई जानकारी सामने आई है। नयनतारा- बियॉन्ड द फेयरी टेल नवंबर में नेटफ्लिक्स पर आएगी। स्ट्रीमिंग पार्टनर ने डॉक्यू-फिल्म का पोस्टर जारी किया और इसके रिलीज की तारीख से पर्दा भी उठाया। शुरुआत में डॉक्यूमेंट्री फिल्म नयनतारा- बियॉन्ड द फेयरी टेल एक शादी की फिल्म के रूप में शुरू हुई थी। फिर बाद में यह उनके शानदार करियर और उनके पारिवारिक जीवन के बारे में एक डॉक्यू-फिल्म में बदल गई। डॉक्यूमेंट्री में सरोगेसी के जरिए अभिनेत्री के मां बनने और उससे जुड़े विवाद को भी दिखाया गया है। नेटफ्लिक्स ने नयनतारा की फिल्म का नया पोस्टर साझा करते हुए खुलासा किया कि यह डॉक्यू फिल्म 18 नवंबर को रिलीज होगी। इस दिन नयनतारा का जन्मदिन भी है। ऐसे में नयनतारा की फिल्म उनके जन्मदिन पर प्रशंसकों के लिए एक तोहफा होगा। 30 अक्टूबर को नेटफ्लिक्स इंडिया साउथ ने एक्स पर डॉक्यूमेंट्री की रिलीज की तारीख की घोषणा की। डॉक्यूमेंट्री का रन-टाइम एक घंटा 21 मिनट है। पोस्टर को साझा करते हुए नेटफ्लिक्स ने कैप्शन में लिखा, एक स्टार ऑन-स्क्रीन और एक स्टार इन लाइफ। 18 नवंबर को नयनतारा- बियॉन्ड द फेयरी टेल देखें, केवल नेटफ्लिक्स पर। दो साल पहले नेटफ्लिक्स पर नयनतारा- बियॉन्ड द फेयरी टेल का टीजर रिलीज किया गया था। टीजर में नयनतारा और विग्नेश शिवन को अपने रिश्ते और अपनी शादी की तैयारियों के बारे में बात करते हुए देखा गया था। उन्होंने प्रशंसकों द्वारा उन्हें दिए गए टैग और अपने करियर विकल्पों के बारे में भी बात की।

नयनतारा की आगामी फिल्में

नयनतारा को उनके प्रशंसक लेडी सुपरस्टार के नाम से जानते हैं। वह दो तमिल फिल्मों, टेस्ट और मन्नंगट्टी सिंस 1960 की रिलीज का इंतजार कर रही हैं। वह वर्तमान में अभिनेता कविन के साथ एक अनाम फिल्म और निविन पॉली के साथ डियर स्टूडेंट्स की शूटिंग कर रही हैं।

कंगुवा अभिनेता सूर्या ने की बॉबी देओल की तारीफ

साउथ अभिनेता सूर्या अपनी फिल्म कंगुवा के प्रमोशन में बिजी हैं। सूर्या ने हाल ही में फिल्म कंगुवा के प्रमोशन के दौरान अपनी फिल्म और पसंदीदा सितारों को लेकर बात की। फिल्म कंगुवा के ऑडियो लॉन्च के दौरान सूर्या ने सभी को इस समारोह में आने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने, अन रथथमुम एन रथथमुम वेरु वेरा लाइन का इस्तेमाल किया। कंगुवा फिल्म में बॉलीवुड अभिनेत्री दिशा पटानी और अभिनेता बॉबी देओल भी नजर आने वाले हैं। लॉन्च इवेंट में सूर्या ने दोनों बॉलीवुड सितारों के लिए भी कुछ बातें कही हैं।

फिल्म का संगीत है बहुत ही खास

अभिनेता सूर्या के लिए फिल्म का संगीत बहुत ही खास है। सूर्या ने इस समारोह में कहा कि देवी श्री प्रसाद यानी डिएसपी भाई का मेरे फिल्म करियर में खास योगदान है। हमने कई फिल्मों में एक साथ काम किया है। उन्होंने कंगुवा में काम करने की बात सोची थी और फिल्म की हकीकत ने मुझे इस कल्पना को सच होते देखा है। इस फिल्म का संगीत बहुत ही खास है।

बॉबी देओल से भी कही ये बात

सूर्या ने बॉबी देओल से कहा, आप मेरे भाई की तरह हैं। आपका स्टारडम बहुत बड़ा है। जब वह सेट पर आते थे, तो ऐसा लगता था जैसे कोई सितारा जमीन पर उतर आया हो। सूर्या ने कहा कि कंगुवा बॉबी के प्रोजेक्ट में आने के बाद एक अखिल भारतीय फिल्म बन गई।

सिंहासन के लिए भिड़ेंगे अली फजल-आदित्य रॉय कपूर

राज एंड डीके की आगामी नेटफ्लिक्स सीरीज रक्त ब्रह्माण्ड अपने एलान के बाद से ही सुर्खियों में है। इस सीरीज के कलाकारों को लेकर समय-समय पर तमाम रिपोर्ट्स सामने आ चुकी हैं। वहीं, ताजा रिपोर्ट की मानें तो आदित्य रॉय कपूर और अली फजल इस सीरीज में एक रोमांचक प्रतिद्वंद्विता को जीवंत करने के लिए तैयार हैं, जहां वे सिंहासन के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाले विरोधी राजकुमारों की भूमिका निभाएंगे।

क्या होगी रक्त ब्रह्माण्ड की कहानी?

तुम्बाड फेम राही अनिल बर्वे द्वारा निर्देशित यह सीरीज फंतासी और एक्शन के एक मनोरंजक मिश्रण का वादा करती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह पुरस्कार विजेता लेखक जी.ए. कुलकर्णी की प्रसिद्ध मराठी लघु कहानी विघुशाक पर आधारित है। रक्त ब्रह्माण्ड एक पौराणिक दुनिया में प्रवेश करती है जहां दो शाही भाई सत्ता की तलाश में आपस में भिड़ते हैं। राजा के रूप में अपने स्थान के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाले प्रत्येक राजकुमार को विस्तृत परीक्षणों की एक सीरीज के माध्यम से अपनी ताकत और बुद्धि साबित करनी होगी।

राही अनिल बर्वे ने बनाई योजना

लघुकथा के रूप में कहानी की उत्पत्ति ने एक गहन, एकल-स्थान कथा प्रदान की और निर्देशक बर्वे ने इस दुनिया को और अधिक विस्तारित करने की क्षमता देखी। प्रारंभ में एक फीचर फिल्म पर विचार करते हुए, उन्होंने आखिरकार निर्णय लिया कि कहानी की गहराई को सीरीज प्रारूप में सबसे अच्छा प्रदर्शित किया जा सकेगा।

राज एंड डीके होंगे निर्माता

जब राज एंड डीके और पटकथा लेखक सीता आर. मेनन शामिल हुए तो यह सीरीज नेटफ्लिक्स भारत की पहली भव्य फंतासी सीरीज में विकसित हुई। इसमें छह एक्शन से भरपूर एपिसोड थे जो देखने में आकर्षक और भावनात्मक रूप से जुड़ाव के अनुभव का का वादा करते हैं। मूल कहानी एक शाही दरबारी विदूषक के इर्द-गिर्द केंद्रित है, जिसे एक भाई ने अपने भाई-बहन को मात देने की दौड़ में मुख्य सलाहकार के रूप में चुना था। सीरीज रूपांतरण में, दर्शक इस किरदार को साजिश और अप्रत्याशितता की परतें जोड़ते हुए देखने की उम्मीद कर सकते हैं। दो मुख्य किरदारों के रूप में आदित्य रॉय कपूर और अली फजल के अलावा सामंथा रुथ प्रभु और वामिका गब्बी भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं।

अभिनय ही नहीं, लेखन में भी आगे हैं टिस्का

अभिनेत्री टिस्का चोपड़ा अपना जन्मदिन मना रही हैं। कई चर्चित टीवी शो के अलावा टिस्का ने कई बॉलीवुड फिल्मों में भी काम किया है। फिल्म तारे जमीन पर में टिस्का ने ईशान की मां का रोल निभाया। टिस्का ने अलग-अलग भाषाओं की 45 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय किया है, ओटीटी सीरीज में भी वे नजर आ चुकी हैं। अंग्रेजी साहित्य से ग्रेजुएट टिस्का ने थिएटर में काफी काम किया है, वे अभिनेत्री होने के साथ-साथ लेखक भी हैं। उनकी लिखी किताब एक्टिंग स्मार्ट बेस्ट सेलर है। अभिनेत्री टिस्का चोपड़ा ने एयर इंडिया में पायलट संजय चोपड़ा के साथ शादी रचाई।